चन्दामामा
अगस्त १९६९
75P

चन्दामामा

अगस्त १९६९

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ९-००

कोलगेट से सांस की दुर्गंध रोकिये और दंत-क्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये !

क्यों कि : एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेंटल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंत-क्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल खत्म कर देता है। और कोलगेट-विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का...अधिक दंत-क्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह बेमिसाल घटना है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज्यादा मज़बूत दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोगों को दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही पसंद है।

SENSATIONAL
AND BIG NEWS
OF THE YEAR

९ वाँ राफ़िल ५ लाख रुपये ३५६ पुरस्कारों में प्रदान करता है।

आप अपना रुपया एक उत्तम कार्य में लगाइये जो आपके भाग्य का भी फ़ैसला कर सकता है।

जीतिये

संक्षेम-निधि

ड्रॉ की तारीख़ ३०-८-१९६९

अध्यक्ष
ए.ए.एस.
सचिव

गौरव कोषाध्यक्ष
पी. सीतापतिराव
जनरल मैनेजर, स्टेट बैंक आफ हैदराबाद

दो लाख	२,००,०००-००
४०,०००-००	८०,०००-००
२०,०००-००	६०,०००-००
५,०००-००	५०,०००-००
१,०००-००	४०,०००-००
५००-००	५०,०००-००
१००-००	२०,०००-००
रु. ५,००,०००-००	

द्वितीय पुरस्कार : रु. १,५०० तृतीय पुरस्कार : रु. १,०००

उपलब्ध होंगे । १०० टिकटों का मूल्य रु. २५ मात्र, टिकटों का मूल्य पहले ही चुकाना होगा ।

हेड. नं. ५-८-५१, लक्ष्मीभवन, फतेसुल्तान स्ट्रीट, हैदराबाद-१ से पा सकते हैं ।

फोन: ४४०५१

अन्ध्र प्रदेश संक्षेम-निधि के लक्ष्य हैं ।

LIFEBUOY
for health

माल्ट से कहीं
ज्यादा पौष्टिक पदार्थ
माल्टेक्स में हैं!
SATHE
Maltex
BISCUITS
साठे बिस्कुट
एण्ड चॉकलेट कं. लि.,
पूना-2
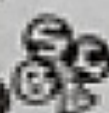
चन्दामामा

संपादक: चक्रपाणी

हमें यह सूचित करते बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि दीपावली के शुभ अवसर पर हम चन्दामामा का विशेषांक निकालने जा रहे हैं। विशेषांक में साधारण अंकों की अपेक्षा अधिक पृष्ठ होंगे, जिनमें दो रंगीन चित्रोंवाली कहानियाँ भी होंगी। हम अपने पाठकों को सूचित करना चाहते हैं कि यह विशेषांक ग्राहकों को अतिरिक्त मूल्य चुकाये बिना ही प्राप्त होगा। अतः जो लोग विशेषांक पाना चाहते हैं, वे तुरंत ग्राहक बनकर लाभ उठावें।

वर्ष: २० अगस्त १९६९ अंक: १२

अपूर्व सुंदरी

एक बार एक राजा देशाटन पर निकला।

घूमते-घूमते वह एक विधवा के घर पहुँचा। विधवा देखने में बड़ी सुन्दर थी। उसने राजा की बड़ी अच्छी सेवा की। इससे राजा बहुत खुश हुआ। वह वहीं पर कुछ महीनों तक रह गया। उनकी शादी हुई। उन्हें एक लड़का हुआ।

एक दिन राजा ने अपनी पत्नी से कहा—"मुझे राज्य छोड़कर आये काफी दिन हो गये हैं। अब मुझे लौटना होगा। तुम हमारे लड़के का अच्छी तरह पालन-पोषण करो। जब वह बड़ा हो जायगा, तब उसे मेरे पास भेज दो। उसे पहचानने के लिए यह पदक देकर भेजो। मैं उस पदक को देखते ही उसे युवराज बनाऊँगा।" यह कहकर अपनी पत्नी के हाथ एक पदक दे राजा वहाँ से चला गया।

कई साल बीत गये। लड़का जवान हो गया। एक दिन उस युवक ने अपनी माँ से पूछा—"माँ, यह तो बताओ कि मेरे पिताजी कहाँ पर हैं? वे कौन हैं?"

युवक की माँ ने सोचा कि अब उसे अपने पिता के पास भेजना उचित होगा। यह निश्चय कर पदक उस युवक के हाथ में दिया और बोली—"तुम्हारे पिता फलाने देश के राजा हैं। तुम उनको यह पदक दिखाओगे, तो वे तुमको पहचानकर युवराज बनायेंगे। लेकिन एक बात याद रखो। रास्ते में अगर तुम्हारे सामने कोई कौआ आया तो तुम वापस चले आओ।"

युवक माँ से विदा लेकर अपने पिता के राज्य में पहुँचा। ठीक उसी समय कोई कौआ उसके सामने से आता हुआ दिखाई दिया। युवक घूम पड़ा और घर लौट कर सारी बातें अपनी माँ को सुनायीं।

"तुमने बड़ा अच्छा किया है, बेटा।" माँ ने समझाया।

जगदीश चतुर्वेदी

एक महीने बाद वह युवक फिर अपने पिता के पास निकला। वह इस बार अपने पिता के राज्य की सीमा तक पहुँच ही गया था कि उसके सामने से एक योद्धा आता हुआ दिखाई दिया। इसलिए युवक फिर अपनी माँ के पास लौट आया।

एक महीना और ठहरकर वह युवक अपने पिता को देखने निकला। इस बार वह राज्य में पहुँचकर कुछ दूर चला और एक पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठकर आराम करने लगा। वह बैठा सुस्ता रहा था कि रास्ते से चलते एक योद्धा दिखाई पड़ा।

"यह कमबख्त योद्धा मेरा पीछा नहीं छोड़ता है। इस बार मैं लौटकर नहीं जाऊँगा।" युवक जोर से चिल्ला उठा।

इस बीच में योद्धा उस युवक के पास पहुँचा और बोला—"अरे भैया! क्या चिल्लाते हो? बात क्या है?"

युवक भोला था। उसने अपनी सारी कहानी सुनायी। लेकिन उसे पदक की बात नहीं बतायी और न उसे दिखाया ही।

"मैं राजमहल तक जा रहा हूँ। दोनों साथ चलेंगे। क्या राजा ने तुमको कभी देखा है?" योद्धा ने युवक से पूछा।

"जब मैं छोटा लड़का था, तब देखा है। अब शायद मुझे पहचान नहीं सकते।" युवक ने कहा। दोनों साथ साथ चले। दोनों प्यासे थे। रास्ते में एक कुआँ दिखायी दिया। पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं, गहराई में थोड़ा पानी दिखायी देता था।

योद्धा ने कुएँ में झांक कर देखा और बोला—"अरे भैया, पानी तो अन्दर है। लेकिन उसे लायें कैसे?"

"मैं ला देता हूँ।" यह कहते वह युवक अपने हाथ का लोटा लेकर कुएँ में उतर पड़ा। तब मौका पाकर योद्धा ने

कुएँ पर एक बड़ी चट्टान ढँक दी । तब बोला—"अरे मूर्ख! मेरे हाथों में फँस गये हो ।"

युवक अपनी बुरी हालत का ख्याल कर रोने लगा—"मुझे बाहर तो आने दो ।"

"यह कसम खाओ कि मेरे कहे मुताबिक करोगे, तो मैं तुमको बाहर आने दूँगा । हम दोनों राजा के पास जायेंगे । मैं उनसे कहूँगा कि मैं राजकुमार हूँ और तुम मेरे सेवक हो! तुमको कभी सच्चाई प्रकट नहीं करनी चाहिये, समझे ।"

"मेरे शरीर में प्राण के रहते मैं ऐसा न कहूँगा ।" युवक ने शपथ खायी ।

इसके बाद दोनों राजमहल में पहुँचे । खोजा ने राजा को समझाया कि यही राजकुमार है और उसकी माँ फलाने गाँव में है । राजा ने उसकी बातों पर यकीन करके उस से गले लगाया । उसने पदक दिखाने का आग्रह नहीं किया । पदक की बात राजा भी बिलकुल भूल गया था । राजा ने उसे सारा राजमहल दिखाया और उस रात को उसके सोने के लिए एक चाँदी की चारपाई का इंतज़ाम किया ।

उस रात को खोजा को नींद नहीं आयी । उस वैभव को देखने के बाद उसके मन में यह चिंता सताने लगी कि राजा का असली पुत्र सच्चाई प्रकट कर दे तो वह इस वैभव से वंचित हो जायगा । वह उस युवक से सदा के लिए पिंड छुड़ाने का उपाय सोचने लगा । दूसरे दिन सवेरे राजा ने खोजा को बुलाकर पूछा—"राजमहल का इंतज़ाम क्या तुमको पसंद आया?" इस पर खोजा ने कहा—"सारा इंतज़ाम मुझे पसंद आया, लेकिन अगर कोई कमी है तो केवल एक ही चीज़ की है ।"

"किस बात की कमी है?" राजा ने पूछा ।

"इस महल में केवल अपूर्व सुंदरी की कमी है । यदि वह भी आ जाय तो समस्त

लीजिये कि हमारा महल इंद्रभवन ही है।" बोजा ने जवाब दिया।

"हो सकता है। लेकिन उस अपूर्व सुंदरी को ढूंढ़कर कौन ला सकता है?" राजा ने पूछा।

"मैं अपने सेवक को भेज दूंगा।" बोजा ने कहा।

इसके बाद बोजा ने असली राजकुमार को बुलाकर कहा—"राजा ने यह आज्ञा दी है कि तुम अपूर्व सुंदरी को ढूंढ़कर ले आओ। मैं एक बढ़िया घोड़ा दिलवा देता हूं। तुरंत रवाना हो जाओ।"

युवक घबरा गया और बोला—"मैं क्या जानता हूं कि अपूर्व सुंदरी कहां पर है?"

"तब तो क्या मैं राजा से यह कह दूं कि तुमने जाने से इनकार कर दिया। वे तुम्हारा सर कटवा देंगे।" बोजा ने धमकी दी।

लाचार होकर राजकुमार घोड़ा लेकर नगर छोड़कर चला गया। नगर को पार करते ही वह घबरा गया और एक पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगा।

एक बूढ़ी औरत उसके पास आयी। उसने पूछा—"बेटा, रोते क्यों हो?"

युवक ने सारी कथा सुनायी।

"तब तो तुम अपने किये का फल भोगो।" यह कहकर वे राजकुमार को एक बड़े कमरे में ले गये और चालीस हंडियों में भरे मांस को दिखाते हुए बोले–"सवेरा होने के पहले तुम यह सारा मांस खा डालो, वरना तुम्हारा सर धड़ से अलग किया जायगा।" यह कहकर राजकुमार को कमरे में बंद करके पहरेदार चले गये।

युवक घबरा गया। उसके बाद उसे सिंहों की बात याद आयी कि इसी रात को वे आ जायेंगे। फिर यह सोचकर डर गया कि सिंह आयेंगे कि नहीं। लेकिन सिंह समय पर आये और मांस खाकर चले भी गये। युवक समझ नहीं पाया कि पहरेदारों से बचकर वे अन्दर कैसे आये। दूसरे दिन पहरेदारों ने देखा कि हंडियां एक दम खाली थीं। वे सोचने लगे–"देखने में यह भोला लगता है, पर कैसा काम कर डाला।"

पहरेदार राजकुमार को एक दूसरे कमरे में ले गये। उस कमरे में अनाज का एक बड़ा ढेर लगा हुआ था। पहरेदारों ने उसे सावधान किया कि दूसरे दिन सवेरे तक वह सारा अनाज खा डाले, वरना उसका सर उड़ा दिया जायगा। रात को लाखों की संख्या में चींटियां आकर अनाज को उठा ले गयीं।

तीसरे दिन पहरेदार एक और कमरे में राजकुमार को ले गये, जहां चालीस हंडियां शहद से भरी थीं। सुबह तक उसे पी जाने का राजकुमार को आदेश हुआ। रात को असंख्य मधुमक्खियां आयीं और शहद चाटकर चली गयीं।

तीनों परीक्षाओं में सफल होकर राजकुमार ने अपूर्व सुंदरी को जीत लिया। वह उस सुंदरी को घोड़े पर बिठा कर राजमहल के लिए रवाना हुआ।

कौआ उस वक्त किले के एक बुर्ज पर बैठा था। उसने देखा कि राजकुमार अपूर्व सुंदरी को साथ ला रहा है। राजकुमार के

निकट जाते ही उसने कहा—"देखो भैया, उस सुंदरी को मेरे पास ले आओ।"

दोनों सीढ़ियाँ पारकर बुर्ज में पहुँचे। बौना ने झट अपूर्व सुंदरी का हाथ पकड़कर खींचते हुये कहा—"जल्दी चलो, हम दोनों शादी कर लेंगे।"

उस सुंदरी ने झटका देकर बौना का हाथ छुड़ा लिया और कहा—"छी, दुष्ट, हट जाओ! मैं उसी के साथ शादी करूँगी जो मुझे जीतकर यहाँ लाया है।"

इस पर नाराज हो बौना ने राजकुमार को ऊपर उठाया और किले के नीचे फेंक दिया। तब बोला—"अब भी सही, तुम मेरे साथ शादी करोगी कि नहीं?"

अपूर्व सुंदरी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह झटपट सीढ़ियाँ उतरकर नीचे पहुँची। अपने जूड़े में से संजीवनी औषध निकालकर राजकुमार के शरीर से छुआ दिया। राजकुमार जीवित हो उठा।

राजकुमार ने आँखें खोलकर अपूर्व सुंदरी से पूछा—"मैं इतनी ऊँचाई से नीचे गिरा दिया गया। फिर भी बच रहा। यह आश्चर्य की बात है न?"

"तुम मर गये थे। मैंने तुमको फिर जिला दिया।" अपूर्व सुंदरी ने कहा।

"क्या सचमुच मैं मरकर जीवित हो गया? तब तो मैंने उस बौना को जो वचन दिया, अब वह नहीं चलने का है। मैं अभी राजा से सच्ची बात बता देता हूँ।" ये शब्द कहते राजकुमार अपूर्व सुंदरी को साथ ले राजा के पास पहुँचा और उन्हें सारी बातें सुनाकर पदक दिखाया।

"उस दुष्ट को मैं फाँसी के तख्ते पर लटकवा दूँगा।" राजा गरज उठा। लेकिन बहुत कुछ ढूँढ़ने पर भी बौना का पता न चला। राजा ने उस युवक का युवराज के रूप में पट्टाभिषेक किया और अपूर्व सुंदरी के साथ उसका विवाह किया।

शिथिलालय

[१९]

[शिखिमुखी तथा विक्रमकेसरी ने शिथिलालय के पुजारी की खोपड़ी को लेकर नागमल्ली को बंधन मुक्त किया। पुजारी नरसिंह के साथ जंगल में भाग गया। नागमल्ली ने शिखिमुखी को वचन दिया कि ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों से उसके लौटने तक वह शादी नहीं करेगी। इसके बाद–]

शिवाल अपने अनुचरों को साथ लेकर दुपहर तक शाबरबस्ती में पहुँचा। रास्ते-भर में वह यह सोचकर परेशान था कि उसकी गैर हाज़िरी में शिथिलालय के पुजारी ने शाबरबस्ती पर हमला करके कुछ अनिष्ट तो नहीं किया है। लेकिन बस्ती में पहुँचते ही ऐसी कोई घटना न घटी देख वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने गाँव को बिलकुल सुरक्षित पाया।

बहुत दिनों के बाद शिवाल को विक्रमकेसरी के पिता जयपाल द्वारा भेजे गये ताड़पत्रों को आराम के साथ पढ़ने का मौका मिला। उन पत्रों में निर्देशित कुछ प्रदेशों के नाम देखकर उसे यह समझने में थोड़ी सहायता मिली कि जयपाल के पिता विक्रमकेसरी को दुबारा ब्रह्मपुत्र की घाटियों में क्यों जाना पड़ा था। उसने दूसरी बार भी यात्रा ब्रह्मपुत्र की घाटियों
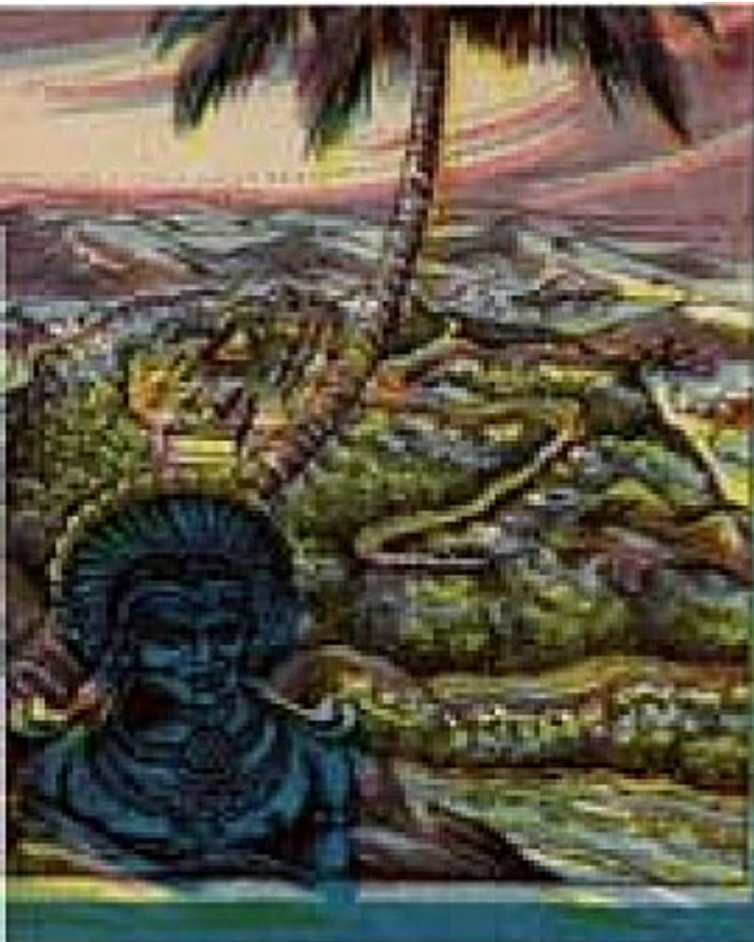
में स्थित अनेक टापुओं में से एक कुटिलक टापू में पहुँचने के लिए ही की थी। जनश्रुति के अनुसार उसी टापू में शिथिलालय है। कहा जाता है कि शिथिलालय में असंख्य धन व सोने के साथ अपूर्व शिल्प-संपदा भी भरी पड़ी है। विक्रमकेसरी उन शिल्पों को लाकर अपने राजमहल को सजाना चाहता था।

विक्रमकेसरी ने उन ताड़पत्रों में शिथिलालय तक पहुँचने के लिए जो जो मार्ग हैं, उनका विस्तारपूर्वक वर्णन किया था। वह मंदिर सैकड़ों सालों के पूर्व इम्म नामक जंगली जाति के लोगों द्वारा बनाया गया था। प्रकृति के प्रकोप के कारण तथा ब्रह्मपुत्र नदी में बाढ़ आ जाने से उस टापू के चारों ओर का प्रदेश जलमग्न हो गया था। इस वजह से उस मंदिर का पता कई वर्षों तक किसी को न लग सका। फिर भी लोगों का विश्वास है कि इम्मू जाति के कुछ वृद्ध शिथिलालयवाले टापू के संबंध में जानकारी रखते हैं।

शिवाल ने सैकड़ों पृष्ठोंवाले ताड़पत्रों में से शिथिलालय से संबंधित पृष्ठों का समाचार विक्रमकेसरी को सुनाते हुए कहा—"विक्रम, तुम्हारे दादा विक्रमकेसरी प्रभु के अभी तक जीवित रहने का मुझे विश्वास नहीं है। वे उम्र में मुझसे काफ़ी बड़े हैं। अलावा इसके ब्रह्मपुत्र की घाटियों में अकेले घूमते विष ज्वरों के शिकार हो आज तक जीवित नहीं रह सकते। ऐसा मेरा अनुमान है। फिर भी तुम यह समाचार अपने पिता से कहो। अगर वे उन प्रदेशों में जाना चाहेंगे तो हम रोक नहीं सकते। तुमको वे भेजना चाहेंगे तो तुम्हारी मदद के लिए सूरसेन देश तक ही नहीं बल्कि ब्रह्मपुत्र नदी की

घाटियों तक भी मैं अपने पुत्र शिखिमुखी को भेज रहा हूँ।"

इसके बाद विक्रमकेसरी ने शिवाल के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। दूसरे दिन सबेरे वह शिखिमुखी को साथ लेकर अपने देश के लिए रवाना हुआ। रास्ते में लुटेरों तथा शिखिनाथ के पुजारी के द्वारा कोई विपत्ति आने पर उन्हें बचाने के लिए शिवाल ने दो विशाल काय ताकतवर युवकों को भी अंगरक्षक बनाकर भेजा।

रास्ते में किसी भी प्रकार की तकलीफ पाये बिना पंद्रह दिन लगातार यात्रा करके विक्रमकेसरी और शिखिमुखी सुरसेन देश में जा पहुँचे। जयपाल ने विक्रमकेसरी के द्वारा सारा समाचार जानकर कहा कि चाहे वह कार्य कैसे भी खतरे से खाली क्यों न हो, वह ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में जाकर अपने पिता का समाचार जरूर जान लेगा।

जयपाल के निर्णय का मंत्री तथा प्रमुख राज-कर्मचारियों ने बड़े ही विनम्र शब्दों में विरोध किया। उन लोगों ने यह भी सलाह दी कि ऐसे कठिन कार्य के लिए युवक ही उपयुक्त हैं। इस अवस्था में जयपाल का दूर देशों की यात्रा करना ठीक नहीं है। उनकी सलाह मानकर जयपाल ने यह कार्य अपने पुत्र विक्रमकेसरी को सौंपा।

यात्रा के लिए आवश्यक सारी तैयारियाँ एक सप्ताह के अंदर पूरी हो गयीं। विक्रमकेसरी तथा शिखिमुखी के साथ दो सुशिक्षित शक्तिमान युवकों को भी भेजने का प्रबंध किया। सब लोग एक दिन प्रातःकाल ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में जाने के लिए तैयार हो गये। रवाना होने के पहले जयपाल ने बड़े प्रेम से शिखिमुखी का आलिंगन करके उसके गले में एक रक्षा-पदक बाँधा। वह पदक

जयपाल को अपने पिता के ताड़पत्रोंवाली पेटी में प्राप्त हुआ था। उस पर काली माता की मूर्ति खुदी हुई थी।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी अपने दो साथियों के साथ चार-पांच महीनों तक जंगलों, पहाड़ों में से यात्रा करते कई नदियों को पारकर आखिर कामाख्यपुर पहुँचे। वहाँ पर उन दोनों ने निर्णय किया कि कुछ दिन तक विश्राम करके उन्हें रास्ता दिखाने के लिए किसीको ढूँढ लेंगे और उसकी मदद से हम्मु जातिवालों के प्रदेश में पहुँच जायेंगे। शूरसेन देश के एक पंडित ने जयपाल को बताया था कि उसका पिता महाराज विक्रमकेसरी कुछ समय तक उस प्रदेश में था।

विक्रमकेसरी और उसके साथी कामाख्यपुर पहुँचकर एक सराय में ठहर गये। उस वक्त उस शहर में देवी-उत्सव मनाये जा रहे थे। उस उत्सव को देखने शहर के चारों तरफ दस-बारह कोसों से भी लोग आ रहे थे। उनमें कई प्रकार की जातियों के लोग थे। शिखिमुखी को लगा कि ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में रास्ता दिखानेवाले व्यक्ति को ढूँढने के लिए यह एक अच्छा मौका है। इसलिए वह विक्रमकेसरी तथा अन्य युवकों को साथ ले उत्सव के प्रदेश के लिए निकल पड़ा। गलियों के दोनों तरफ असंख्य छोटी-छोटी दुकानें लगी थीं। उन दुकानों में हाथी दांत की चीज़ें, संगमरमर पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ, जानवरों के चमड़ों से तैयार की हुई चीज़ें; और भी अनेक प्रकार की वस्तुएँ भी बेची जा रही थीं।

चारों युवक उन दुकानों में लगी विविध वस्तुओं को देखते आगे बढ़े। उन्हें गली के मुक्कड़ पर हाथी के चमड़े

बिछाये उस पर मानव की हड्डियों को सजाये बैठा एक ज्योतिषी दिखाई पड़ा। वह देखनेवालों को खूब अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। उसके एक लंबी दाढ़ी, जटाओं की तरह फैले केश और भाल पर एक बड़ी कुंकुम की बिंदी थी।

सिंहमुखी के दल ने उसकी ओर पल भर देखा और वे आगे बढ़ ही रहे थे कि इतने में उस ज्योतिषी ने विक्रमकेसरी की ओर उंगली दिखाते हुए पुकारा—"शूरसेन देश के केसरी, ठहर जाओ। एक बात सुनते जाओ!"

अपने नाम से पुकारनेवाले ज्योतिषी की ओर आश्चर्य के साथ देखते हुए विक्रम ठहर गया। ज्योतिषी को अपने हाथ दिखानेवाले लोग विक्रमकेसरी और उसके साथियों को ध्यान से देखने लगे।

सिंहमुखी ने ज्योतिषी की ओर दो कदम आगे बढ़ाकर कहा—"महाशय, हाथ देख मनुष्यों के नाम बतानेवाले कुछ ज्योतिषियों को मैं जानता हूँ, लेकिन आप मनुष्य का चेहरा देखकर ही उसका नाम व गांव का भी पता लगा सके हैं। क्या आप कभी हमारे प्रदेश में रहे भी थे?"

ज्योतिषी ने ठठाकर हँसते हुए उत्तर दिया—"मैं अघोरी ज्योतिषशास्त्र का पंडित हूँ। शिखिमुखी! मैं भूत, भविष्य और वर्तमान का सच्चा परिचय दे सकता हूँ। तुम लोग जिस रास्ते से आये हो, उसी रास्ते से लौट जाओ। बूढ़ा विक्रमकेसरी ज़िंदा नहीं है। उल्टे तुम लोग एक हज़ार वर्ष की उम्रवाले महा शक्तिशाली के साथ दुश्मनी मोल रहे हो। अगर हिम्मत करके बहुदुम की घाटियों में जाओगे तो तुम लोगों की मौत निश्चित है। याद रखो, फिर वापस न लौट पाओगे!"

ये बातें सुनते ही विक्रमकेसरी उस पर तलवार का वार करने को हुआ। शिखिमुखी ने उसको रोकते हुए धीरे से समझाया—"विक्रम, जल्दबाज़ी न करो। हम पराये देश में हैं। यह कपट ज्योतिषी शिखिलालय के पुजारी का दोस्त या सेवक होगा। उस दुष्ट के ज़रिये ही इसने हम लोगों का समाचार जान लिया होगा या सुना होगा। इसका मतलब यह है कि वह पुजारी इसी शहर में कहीं होगा। लगता है कि वह उसी समय से हम पर आँख गड़ाये हुए है।"

"ऐसा ही लगता है। मैंने सोचा था कि उस दुष्ट का सिर फूट गया है। हमें इस भीड़ में घूमना उचित नहीं है। उसके सेवक आड़ में छिपे रहकर हम पर हमला कर सकते हैं। चलो, हम सराय में लौट जायेंगे।" विक्रमकेसरी ने कहा।

चारों आदमी आध घंटे बाद सराय में पहुँचे, तो सराय के मालिक ने उन लोगों से कहा—"तुम लोगों का गुरु तुम्हारे कमरे में ठहरे हैं। एक घंटे से तुम लोगों का इंतज़ार कर रहे हैं।"

सराय के मालिक की ये बातें सुनकर चारों आदमी अचरज में आ गये।

कि वे दर्वाजे पर पहरा दें, तब वह दो कदम आगे बढ़ाकर बोला–"पुजारी, तुम समझते हो कि उस पेटी में सिद्धिनाथेय तक पहुँचने के लिए जरूरी मार्ग बतानेवाले ताड़पत्र हैं। नहीं, वे पत्र यहाँ नहीं हैं। लो देखो, सदा विक्रमकेसरी उनको अपनी पोशाकों में छिपाये घूमा करता है। जरा निकट आकर पूछो, वह दे देगा।"

विक्रमकेसरी ने अपने कपड़ों में से एक बहुत बड़ा ताड़-पत्र निकालकर दिखाया। पुजारी ने उसकी ओर देखते दांत कटकटाये; तब कहा–"हूँ, मुझे ताड़पत्रों की भीख माँगनी है? अच्छा, मुँह से नहीं, छुरी से माँगता हूँ।" ये शब्द कहते पुजारी ने विक्रमकेसरी पर छुरी फेंक दी।

खतरे का अनुमान पहले ही सिद्धिमुखी ने किया था, इसलिए सिद्धिमुखी ने विक्रम का कंधा पकड़कर नीचे की तरफ खींच लिया। वह छुरी तेजी से जाकर दर्वाजे पर जा चुभी। सिद्धिमुखी ने पुजारी को पकड़ने के लिए छलांग मारी, लेकिन कमरे का पिछला दर्वाजा खोल पुजारी ऊपर से नीचे की ओर कूद पड़ा।

सिद्धिमुखी और विक्रमकेसरी पीछे पिछवे से छत तक पहुँचे। उन्होंने सोचा कि ऊपर से नीचे कूदने पर पुजारी मर जायगा। लेकिन नीचे खड़े वज्रघोष ने पुजारी को नीचे गिरने के पहले बीच में ही पकड़ लिया, उसने पास के दो घोड़ों में से एक पर पुजारी को चढ़ाया और वह दूसरे घोड़े पर छलांग मार बैठ गया।

सिद्धिमुखी झट घूम पड़ा और चिल्लाया–"अजित और वीरभद्र! तुम लोग भागनेवाले उन दुष्टों का पीछाकर उन्हें पकड़ लो।" सिद्धि का आदेश पाकर अजित और वीरभद्र नीचे की ओर दौड़ पड़े। (और है)

कारण उनसे बताया करता था । परन्तु कोई भी उनकी मदद नहीं कर पाता ।

एक दिन उनके पास एक मुनि आया । पति-पत्नी ने उनका सत्कार किया । उन्हें देख मुनि ने स्वयं कहा—"तुम दोनों संतान के वास्ते व्याकुल हो । राजा के लिए तो उनके अनंतर गद्दी पर बैठनेवाले वारिस की ज़रूरत है तो रानी के दिल को सुख पहुँचानेवाली पुत्री चाहिये । परन्तु तुम दोनों की इच्छा पूरी न होगी । मैं एक फल देता हूँ । रानी नहा-धोकर काली माता के मंदिर में जाये और आधी रात के वक्त उस फल को खाने के पहले वह मन में कामना करे कि उसे पुत्र चाहिये या पुत्री । वह जैसी इच्छा करेगी, वैसी संतान पायेगी ।" यह कहकर मुनि ने रानी के हाथ में एक फल रख दिया ।

रनिवास में ही एक कालीमाता का मंदिर था । उस रात को रानी ने स्नान किया । आधी रात के पहले कालीमाता के सामने बैठकर वह सोचने लगी कि उसे पुत्र चाहिये या पुत्री । लेकिन वह पूर्ण रूप से यह निश्चय नहीं कर पायी कि उसे पुत्र चाहिये या पुत्री, इतने में घड़ियाल ने आधी रात के हो जाने की घंटी बजा दी । रानी ने फल खा लिया ।

नौ महीनों के बाद रानी के गर्भ से एक लड़का पैदा हुआ । रानी की प्रसन्नता की सीमा न रही । क्यों कि राजा और रानी पुत्र को ही ज्यादा पसंद करते थे । राज्य का वारिस भी पैदा हो गया ।

लेकिन जिस दिन राजकुमार पैदा हुआ था, उसी रात को रानी का आनंद दुख में बदल गया । क्यों कि आधी रात के होते होते लड़का लड़की के रूप में बदल गया । फिर दूसरे दिन सुबह देखती क्या है, लड़की लड़का बन बैठी है । रानी को पता लग गया कि उसने किस शिशु का जन्म दिया,

वह दिन में लड़का और रात में लड़की बनता जा रहा है। उसने यह भी मालूम किया कि फल खाने के पहले उसने यह कुछ निश्चय नहीं कर पाया था कि लड़का चाहिये या लड़की। इसी का यह परिणाम है। इसलिए रानी ने यह रहस्य [illegible] दासी को छोड़ अन्य लोगों से गुप्त [illegible]।

राजा ने सोचा कि उसे पुत्र ही हुआ है। उसने लड़के का 'विजय' नामकरण किया और उसे क्षत्रियोचित सभी प्रकार की विद्याएँ सिखायीं। राजकुमार दिन में विजय के रूप में और रात में विजया के रूप में रहने लगा। लगभग वह [illegible] वयस्क हो गया, लेकिन उसके जन्म का रहस्य प्रकट न हुआ।

एक दिन पहाड़ी लोगों ने आकर राजा से निवेदन किया—"प्रभु, हमारे जंगल में एक शेर आया हुआ है, आप चाहें तो उसका शिकार खेल सकते हैं।"

"मैं युवराज को शिकार खेलने तुम्हारे साथ भेज दूँगा। वह धनुर्विद्या और खड्ग विद्या में प्रवीण है, फिर भी आज तक शिकार खेलने नहीं गया है।" राजा ने उन्हें समझाया।

विजय अपने सभी अस्त्र लेकर रथ पर सवार हो पहाड़ी लोगों के पीछे चला

गया। दिन भर सब ने शिकार खेला। शाम को विजय ने शेर को मारा। तब पहाड़ी लोगों को वहीं जंगल में छोड़, अपने साथ आये राजभटों को लेकर घर की ओर रवाना हुआ। सूरज डूबने को था। एक मस्त हाथी अचानक राजकुमार के रथ के सामने से दौड़ता हुआ आया। इससे विजय के साथ चलनेवाले राजभट डरकर भाग खड़े हुए। हाथी विजय को अपनी सूंड पर उठाये जंगल में अंधाधुंध भागने लगा। विजय चिल्लाने लगा।

विजय की चिल्लाहट को रत्नगिरि के राजकुमार वसंत ने सुना। वह कुछ दिन पहले जंगल में शिकार खेलने आया था और जंगल के बीच एक टीले पर डेरा डाले रह रहा था। सोनेवाले वसंत ने वह चिल्लाहट सुनी। वह नारी के कंठ जैसा था। वह आवाज भी उसके निकट से आती हुई मालूम हुई। वसंत ने सोचा कि किसी अनाथ नारी को चोर पकड़कर ले जा रहे हैं, यह सोचकर वह कटार ले डेरे से बाहर निकला। उसने देखा कि टीले के नीचे से एक हाथी दौड़ता आ रहा है और उसकी सूंड पर कोई आदमी लटक रहा है।

वसंत दौड़कर टीले के नीचे पहुँचा और उसने अपनी कटार से हाथी की सूंड काट डाली। सूंड कटकर नीचे गिरी और हाथी भाग गया। नीचे गिरी विजया को उठाकर वह डेरे में ले आया।

"ओह, तुम कितनी सुंदर हो! तुम कौन हो? इस जंगल के बीच तुम हाथी के कैसे शिकार हुई हो? तुम्हारे वस्त्र और आभूषणों को देखने पर लगता है कि तुम किसी राजमहल में रहने योग्य हो!" वसंत ने एक साँस में कह दिया।

"मैं अवंतीपुर की राजकुमारी हूँ। मेरा नाम विजया है। मैं सपरिवार हमारी राजधानी में जा रही थी, रास्ते में हाथी

ने मुझे उठा लिया। आपने मेरी रक्षा की। मैं आपका ऋण कैसे चुका सकती हूँ?" विजया ने कहा।

"मैं रत्नगिरि का राजकुमार हूँ। मेरा नाम वसंत है। अगर तुम मुझ से शादी करोगी तो तुम्हारा ऋण चुक जायगा।" वसंत ने जवाब दिया।

"मैं जरूर आपसे विवाह करूँगी। आप घर जाकर अपने पिता को हमारे विवाह के लिए भेजवा दीजिये। अथवा मुझे निश्चय कर हमारे नगर में आ जाइये। क्या यहाँ कहीं कोई तालाब है? मुझे जल्दी नहाना है।" विजया ने पूछा।

"उस मोड़ पर एक तालाब है। तुम स्नान कर जल्दी लौट आओ। मैं यहीं रहूँगा।" वसंत ने विजया से कहा।

विजया चली गयी। वसंत उसके सौंदर्य की बार-बार याद करते खुश होने लगा कि वह उसके साथ शादी करने को राजी हो गयी है। वसंत विजया के इंतजार में सूर्योदय तक बैठा रहा, लेकिन वह लौटकर नहीं आयी।

इस पर वसंत घबरा गया और तालाब के पास जाकर उसके किनारे स्नान करनेवाले विजय को देखा।

"तुम कौन हो? यहाँ कैसे आये हो? यहाँ पर स्नान करने आयी हुई राजकुमारी का क्या हुआ?" वसंत ने विजय से पूछा।

"शायद तुम मेरी बहन विजया के बारे में पूछते हो? वह थोड़ी देर पहले ही परिवार समेत चली गयी है। मैं उसका भाई हूँ। हम दोनों जुड़वें बच्चे हैं।" विजय ने समझाया।

इसके बाद वसंत से थोड़ी देर तक बात करके पोशाक पहनकर विजय वसंत से विदा लेकर टीला उतर आया। थोड़ी दूर चलने पर राजभट उसके सामने आये।

राजकुमार को सुरक्षित देख राजभट बहुत प्रसन्न हुये।

वे सब राजधानी को लौट ही रहे थे कि उन्हें एक नारी का आर्तनाद सुनाई पड़ा। विजय ने अपने रथ को उस ओर बढ़ाया। एक पुरुष किसी नारी के साथ बलात्कार कर रहा था। झट विजय ने उस पुरुष का सर काट डाला। वह नारी विजय के हाथों में बेहोश हो गयी।

इतने में कुछ सिपाही घोड़े आये और पूछने लगे—"हमारी राजकुमारी का क्या हुआ! हमारे सेनापति को किसने मार डाला?"

सिपाहियों ने विजय को समझाया कि उसके हाथ में बेहोश पड़ी हुई युवती रत्नगिरि की राजकुमारी है। वह अपने भाई वसंत के साथ शिकार खेलते समय थोड़े दिन बिताने के ख्याल से सेनापति के साथ निकल पड़ी। रास्ते में जब उसे प्यास लगी तब पानी लाने के लोग चारों तरफ चले गये।

"तुम्हारा सेनापति इस युवती का बलात्कार कर रहा था, तब मैंने इसकी रक्षा की।" विजय ने सिपाहियों को समझाया।

सिपाही जो पानी लाये थे, उसे छिड़कने पर वसंत की बहन लावंती होश में आयी। उसने आँखें खोल विजय को देखते हुए पूछा—"आप कौन हैं? वह दुष्ट कहाँ है?"

"वह दुष्ट मर गया है। तुमको डरने की जरूरत नहीं है।" ये शब्द कहते विजय ने लावंती को अपनी छाती पर से हटाकर जमीन पर बिठाया।

लावंती ने सेनापति का शव देख कर कहा—"आप मेरी रक्षा नहीं करते तो मेरा क्या हाल होता! मैं आप का ऋण कैसे चुका सकती हूँ?"

"मैं अवंतीपुर का राजकुमार हूँ। मेरा नाम विजय है। मेरे साथ विवाह

करोगी तो तुम्हारा ऋण चुक जायगा।" विजय ने कहा।

लवंगी ने लज्जा से सर झुका कर कहा— "मैं आप से जरूर शादी करूँगी। मैं इसे अपना वरदान समझूँगी।"

"तब तो तुम घर लौटकर अपने पिता की आज्ञा लो और हमारे विवाह का मुहूर्त निश्चय करा कर मेरे नगर में लौट आओ।" यह कह कर विजय ने लवंगी से विदा ली और अवंतीपुर को लौट आया।

घर लौटने पर विजय ने अपने माता-पिता से जंगल की वे बातें नहीं बतायीं।

एक महीने के बाद रत्नपुरी के राजा ने अवंती के राजा के पास लग्न पत्रिका भेजी। उसमें लिखा था कि रत्नपुरी की राजकुमारी का विवाह अवंतीपुर के राजकुमार के साथ, तथा रत्नपुरी का राजकुमार अवंतीपुर की राजकुमारी के साथ विवाह करेगा। तथा वे लोग दूसरे ही दिन अवंतीपुर आनेवाले हैं।

यह पत्रिका पढ़कर राजा घबरा गया और अपनी पत्नी से बोला— "यह तो बड़ी खुशी की बात है कि रत्नगिरी की राजकुमारी का विवाह हमारे पुत्र के साथ संपन्न हो जाय, लेकिन उनके पुत्र के साथ

विजय ने समझ लिया कि यह सब उसकी मूर्खता के कारण हुआ है। यदि उसके पिता की इज्जत बचानी है तो उसकी आहुति होने के सिवा दूसरा मार्ग नहीं है। इसलिए वह काली माता के मंदिर में गया और बोला–"माता, तुमने मुझे अपने माँ-बापों को प्रदान कर उन्हें दुख ही दिया। मेरा जन्म सब प्रकार से व्यर्थ हो गया है। तुम मुझे स्वीकार करो।" यह कहते अपना सर काटकर विजय वहीं लुढ़क पड़ा।

उसी वक्त रत्नगिरि के राजकुमार और राजकुमारी अवंतीपुर में पहुँचे। उन्हें विजय का सभी समाचार मालूम हो गया। दिन में पुरुष बन जानेवाली नारी से प्रेम करने की वजह से वसंत के मन में जुगुप्सा पैदा हो गयी।

पर वसंती के मन में जुगुप्सा पैदा नहीं हुई। "दिन में एक घड़ी भी उसकी पत्नी बने रहने पर मेरा जन्म धन्य होगा।" यह कहते उसने विजय का पता पूछा। जब उसे मालूम हुआ कि विजय काली माता के मंदिर में गया है, वह भी वहीं पहुँची। वहाँ पर उसने विजय की लाश को देखा।

शादी करने के लिए हमारी पुत्री कहाँ? ऐसी भूल कैसे हो गयी?"

भूल का कारण कैसे उत्पन्न हुआ, इसकी कल्पना रानी तो कर सकी, पर वास्तविक बात उसे विजय के द्वारा ही मालूम हो सकती थी। आज तक रानी ने जो बात राजा से छिपायी थी, उसे उसने राजा के सामने प्रकट की।

"कैसा अपमान! इस अपमान से बचने का मार्ग क्या है! दिन में पुरुष और रात में नारी बनने वाला हमारा पुत्र किसी के साथ विवाह करने योग्य न होगा।" राजा ने अपना दुख प्रकट किया।

"कालीमाता, मैंने जिसका वरण किया है, उसकी बलि क्यों? हम दोनों को तुम ही एक बनाओ।" ये शब्द कहते लवंगी विजय की कटार लेकर अपना सर काटने को हुई।

तब उसे लगा कि किसी ने उसका हाथ ज़ोर से पकड़ लिया है।

उस वक्त कोई अशरीरवाणी यों सुनाई दी—"मूर्ख नारी! जल्दबाज़ी न करो। कहो, इस शव को पुरुष के रूप में ज़िंदा करूँ या नारी के रूप में?"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन् लवंगी का क्या पूछना उचित होगा? उसे विजय को ज़िंदा करना है या विजया को? उसके विजय से प्यार करने के पूर्व उसके भाई ने विजया के रूप में उससे प्रेम किया था। क्या भाई के वास्ते लवंगी को त्याग करना नहीं चाहिये? अथवा उसे अपने स्वार्थ के वास्ते विजय को ही जिलाना है? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा।"

इस पर राजा ने कहा—"यह संदेह बेमतलब का है। विजया के साथ अब किसी का वास्ता न रहा। रानी प्रभावती पुत्री का सुख पुत्री रूप से अनुभव कर उसे ससुराल भेजने को तैयार है। वसंत के मन में विजया से प्रेम करने के कारण पहले ही जुगुप्सा पैदा हुई है। पुत्र का जन्म देने के कारण महाराज चन्द्रसेन की इच्छा तभी पूरी होगी जब अपने अनन्तर उसे गद्दी पर बिठायेंगा! विजय के वास्ते अपनी आहुति देने को लवंगी तैयार बैठी हुई है। कालीमाता वरदान लवंगी को दे रही है, न कि वसंत को। किसी भी रूप में देखो, अब विजय को ही जीना है, न कि विजया को।"

इस प्रकार राजा के मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

बैरागी

एक बैरागी था। वह सब जगह घूमा करता था। हमेशा तीर्थयात्रा करते देशाटन करता था। किसी से पैसा न लेता; कोई खाना खिलावे तो खाता, नहीं तो उपवास करता।

एक दिन जोर से पानी बरस रहा था। बैरागी बरसात में भीग गया और एक गाँव पहुँचकर एक अमीर के घर के बरामदे में चबूतरे पर बैठ गया।

घर का मालिक भीतर खिड़की में से बैरागी को देख बोला—"छी, छी! तुम्हारे कपड़े भीग गये हैं। उनमें से बदबू आ रही है। चबूतरा सब खराब हो गया। जाओ! जाओ!"

"हर हर" कहते बैरागी चबूतरे पर से उठा, बरसात में भीगते हुए थोड़ी दूर गया। वहाँ पर एक झोंपड़ी के नीचे दीवार से सटकर खड़े हो बोला—"हर हर।"

यह बात सुनकर उस घर का गरीब आदमी लालटेन लेकर बाहर आया। बैरागी को देख बोला—"पानी बरस रहा है। अंदर आइये।"

बैरागी भीतर चला गया। घर के मालिक की पत्नी ने बैरागी को फटे हुए वस्त्र दिये और बोली—"तुम इन कपड़ों से अपना शरीर पोंछ लो और गीले कपड़े की जगह सूखे कपड़े पहन लो।" बैरागी ने वैसा ही किया और आराम से बैठ गया।

थोड़ी देर बाद घरवालों ने बैरागी को रोटी का टुकड़ा, चटनी, थोड़ी-सी कांजी देकर कहा—"हम गरीब हैं। इन्हीं से भूख मिटाइये।" "हर हर" यह कहते बैरागी ने उनका दिया हुआ खाना बड़े प्रेम से खा लिया, फिर फटी चटाई पर सो गया।

प्रकाश कुमार

दूसरे दिन बैरागी उठा। अपने कपड़े आप पहनकर घरवालों के कपड़े उन्हें वापस किये। वहाँ से जाने को वह तैयार हो गया। तब घरवाले ने एक छोटा डिब्बा लाकर उसमें जो पैसे थे सब बैरागी के हाथों में रखते हुए निवेदन किया—"महाशय, रास्ते के खर्च के लिए ये पैसे काम देंगे। ये पैसे रखिए।"

इस पर बैरागी बोला—"हर हर"। यह कहते बैरागी ने उन पैसों को डिब्बे में डाल दिया और कहा—"बेटा, मैं रुपये-पैसे नहीं लेता।" बैरागी उन पैसों को वहीं पर छोड़कर चला गया। बैरागी ने जो पैसे डिब्बे में गिराये वे भारी मालूम हुए। अचरज में आकर घरवाले ने जब उन पैसों को अपने हाथ में उंडेल लिया तो देखता क्या है कि वे सब सोने के सिक्के बन गये हैं।

"यह कोई सिद्ध मालूम होता है।" घरवाले ने कहा।

"ये नये कपड़े देखो।" पत्नी ने आश्चर्य में आकर कहा—"कल रात को बैरागी को पहनने के लिए जो फटे कपड़े दिये गये वे जरी के कपड़े बन गये हैं। बैरागी रात को जिस फटी चटाई पर लेटा था वह बढ़िया कालीन बन गई है। यह तो कोई महात्मा मालूम होता है। मामूली आदमी नहीं।"

उस दिन से लेकर उस गरीब आदमी की किस्मत बदली गई। पुराने घर की जगह नया घर बन गया था।

अपने पड़ोस में स्थित गरीब की हालत अच्छी होते, बगल के घरवाला अमीर देखता रहा। उसके पता लगाने पर मालूम हुआ कि जिस बैरागी को उसने भगा दिया था, उसकी सेवा करने के कारण से ही वह गरीब धनी बन गया है।

"मुझे मालूम नहीं था कि वह बैरागी सिद्ध है। उफ़, मैंने कैसा मौका हाथ से

निकल जाने दिया।" यह सोचते यह अमीर आदमी हज़ारों आँखों से उस भिक्षु का इंतज़ार करने लगा कि यहीं शायद वह फिर दिखायी दे।

एक साल बीत गया। फिर बरसात शुरू हो गयी थी। पानी में भीगते हुए वही बैरागी अमीर के घर की ओर ताकते, पुरानी स्मृति की याद कर गरीब के घर की ओर चलने लगा।

इस बीच में अमीर व्यक्ति बैरागी को देख दौड़ते आया और बोला—"बैरागी जी, आइये, पधारिये! इस बरसात में आप जायेंगे ही कहाँ? हमारे घर को पवित्र बनाइये।" उसने बैरागी का स्वागत किया, एक छोटे से कमरे में ले जाकर पोंछने व पहनने के लिए फटे पुराने कपड़े दिये। रोटी का टुकड़ा, चटनी और कांजी बैरागी के सामने रखकर बोला—"आप खाइये, महाराज!"

बैरागी के खाने के बाद अमीर ने एक फटी चटाई बिछायी और उस पर बैरागी को भी सोने को कहा।

सबेरा होते ही बैरागी उठा। अमीर के दिये कपड़े उतारकर अपने कपड़े पहने और जाने को तैयार हो गया। तब अमीर ने अंजली भर तांबे के सिक्के लाकर उसके हाथ में डालते हुए कहा—"ये पैसे रास्ते के खर्च के लिए रख लीजिये।"

"मैं पैसे नहीं लेता, बेटा!" यह कहते बैरागी पैसे लिये बिना चला गया।

अमीर ने अपने तांबे के सिक्कों को बड़ी व्यग्रता से देखा! वे तांबे के ही सिक्के थे और बैरागी के छोड़े गये कपड़े व चटाई भी ज्यों के त्यों थे।

अगर कोई परिवर्तन हुआ तो उसकी किस्मत में ही हुआ था। उसे बराबर नुकसान होने लगा और उसकी सारी संपत्ति हर गयी।

पालती है। मुझे अपार दुख और क्रोध भी आया, मैंने कई न्यायाधिकारियों से प्रार्थना भी की, लेकिन सबने मेरे विरुद्ध ही फ़ैसला किया। इसलिए मैंने आमरण अनशन शुरू किया। मैं न्यायशास्त्र की बात नहीं जानता, लेकिन यह सत्य है कि मैंने यह कुआँ नहीं बेचा है।

राजा ने सभी न्यायाधीशों को बुलाकर पूछा। उन सबने राजा से यही कहा—"महाराज, इस व्यक्ति ने हमें बहुत तंग किया है। इसे न्याय की कोई परवाह नहीं है।"

राजा ने विक्रय-पत्र मंगवाकर देखा। उसमें स्पष्ट लिखा था कि कुएँ सहित घर बेचा गया है। पर राजा के मन में यह विश्वास जम गया कि घर बेचनेवाले के साथ अन्याय हुआ है।

राजा ने बाहर आकर अपने नौकर को बुलाया, उसके हाथ अपनी राज मुद्रिका देकर कहा—"तुम फलाने व्यापारी के मुनीम के पास जाकर जिस साल घर खरीदा गया, उस साल की हिसाब बही ले आओ। उसके लौटाने तक यह मुद्रिका अपने पास रखने को कह दो।"

नौकर ने हिसाब-किताब लाकर राजा के हाथ दी। उसमें पत्र के लिखनेवाले के नाम एक हज़ार दीनार का खर्च लिखा था। राजा ने उसे सभासदों को दिखाया, फिर पत्र लिखनेवाले को बुलवाकर पूछा। उसने यह स्वीकार किया कि क्रय-पत्र में उसने केवल एक अक्षर बदल दिया है। कुएँ रहित घर खरीद लिया के स्थान पर, मैंने कुएँ सहित बदलकर लिखा है।

सभासदों के निर्णयानुसार राजा ने उस घर को बेचनेवाले को उसे पुनः दिलाया और व्यापारी को देश निकाला सज़ा दी। (शेष अगले अंक में)

राजा का वैराग्य

एक राजा के दरबार में एक पंडित रोज पुराण पढ़ा करता था। पुराण के सुनते-सुनते राजा के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि लौकिक बंधनों से मुक्ति पाकर मन की शांति प्राप्त करनी चाहिये। राजा ने सोचा कि वही पंडित मुझे इन बंधनों से मुक्ति दिला सकता है, जो रोज दरबार में आकर पुराण पढ़ता है। और पूछा—"पंडितवर, सांसारिक बातों से मुक्ति पाने का मुझे मार्ग बताइये।"

इस पर उस पंडित ने विनयपूर्वक कहा—"प्रभु! मैं अपना पेट भरने के लिए पुराण पढ़ कर, उसमें वर्णित विषय बताने वाला हूँ। परंतु आध्यात्मिक विषय समझाने वाला तपस्वी मैं नहीं हूँ। सांसारिक बंधन मुझसे छूटे नहीं, ऐसी हालत में मैं आप को छूटने का मार्ग कैसे बता सकता हूँ?"

इस पर राजा ने क्रोध में आकर कहा—"सुनो, ब्राह्मण! भवसागर से मेरा तरना तुमको पसंद नहीं है। इसलिए तुम यह स्वांग रचते हो। तुम मुझे मुक्ति दिलाने का मार्ग जानते हो, लेकिन मुझ से छिपाते हो। तुम भली भांति सोच लो, अगर तुम कल मुझे मुक्ति का मार्ग न बताओगे तो तुम को मैं न केवल नौकरी से हटा दूंगा, बल्कि तुम्हारा सर भी कटवा डालूंगा।"

पुराण पढ़ने वाले पंडित का कलेजा धक् धक् करने लगा। वह बड़े दुखी हो घर चला गया। उस पंडित की एक होशियार लड़की थी। उसने अपने पिता को दुखी देख इसका कारण पूछा। पिता ने उसे दरबार में घटी सारी बातें बतायीं।

सारी कहानी सुनकर उसने कहा—"पिताजी, केवल इसी बात के लिए चिंता

कहते हैं? कल जब आप पुराण पढ़ने के लिए दरबार में जायेंगे, तब मुझे भी साथ ले चलिये। मैं राजा को उचित जवाब दूँगी।"

दूसरे दिन राजसभा में पंडित के साथ उसकी पुत्री भी चली गयी। जाते-जाते वह अपने साथ एक हाथ भर लंबा रस्सा भी ले गयी।

दरबार लगा हुआ था। पंडित ने पुराण पढ़ना शुरू किया। उसकी पुत्री एक खंभे के पास पहुँची। अपने पैरों को खंभों से लपेट कर रस्से से अपने को खूब बांध लिया और वह जोर जोर से रोने लगी।

उस लड़की के रोने से पुराण का कार्यक्रम भंग हो गया। सब कोई उससे पूछने लगे कि बात क्या है।

"मुझे छुड़ा दीजिये। मुझे छुड़ा दीजिये।" लड़की चिल्लाने लगी।

किसी ने उसके पैरों में रस्सा बांधा देख उसे खोल दिया। फिर भी वह पैरों से जकड़कर खंभे को लपेटकर चिल्लाने लगी—"मुझे छुड़वा दीजिये! मुझे छुड़वा दीजिये।"

राजा को गुस्सा आया। वह गद्दी से उतर आया और बोला—"मूर्ख लड़की, तुम्हीं खंभे से लिपट कर किसी से छुड़ाने को क्यों कहती हो? तुम्हारा दिमाग खराब तो नहीं हो गया है?" इस पर पंडित की लड़की ठठाकर हँस पड़ी और बोली—"महाराज, हम दोनों ही मूर्ख हैं। आप तो अपने राज्य, अधिकार, संपत्ति आदि से लिपटे रहकर मेरे पिताजी से छुड़ाने के लिए नहीं पूछते? यदि सचमुच आप दुनिया से संबंध तोड़ना चाहते हैं तो आपको रोकनेवाला कौन है?"

राजा का सर लज्जा से झुक गया। उसने पंडित और उसकी पुत्री से भी क्षमा माँगी।

मादा भेड़िया

एक गांव में एक गरीब औरत थी। उसके केशव और गुह नामक दो बेटे थे। उस औरत के पास जमीन और जायदाद नाम से कुछ न थी। वह उन बच्चों का पेट पालने गांवों में घूमकर भीख मांगती थी। एक गांव में वह बीमार पड़ी और मर गयी। गांववालों ने उसकी लाश का दाह-संस्कार किया और सोचा कि इन अनाथ बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया जावे?

उस गांव में सब से बड़ा जो अमीर था, उसके सिर्फ दो बेटियां थीं, बेटे न थे। इसलिए उसने केशव और गुह का पालन-पोषण करने को मान लिया। उस अमीर किसान के पास काफ़ी भेड़ें और भैंसें थीं। उनको चराने का काम उन लड़कों को सौंपा गया। केशव गायें चराता और गुह भेड़ें चराता था।

दोनों भाइयों की उम्र में कोई बड़ा अंतर भी न था, लेकिन उनकी अक्ल में बड़ा फ़र्क था। केशव हिम्मतवर और साहसी था। गुह दुबला-पतला और कायर था। मालिक ने केशव के हाथ एक चाबुक दिया था। केशव हमेशा उस चाबुक को चटकाते, चिल्लाया करता था। गुह ने खुद बांस से एक बंसी तैयार की। उस पर वह गीत गाया करता था। वह बंसी सदा छाया की तरह उसके हाथ लगी रहती थी।

अमीर किसान की लड़कियों में भी अंतर था। बड़ी लड़की कटु स्वभाव की थी। मां के मर जाने से घर की सारी जिम्मेदारी वही संभालती थी। वह केशव और गुह को कभी पेट भर खाना नहीं खिलाती थी। केशव के हाथ के चाबुक से वह डरती थी। लेकिन जरा भी मौका

मनोहर वर्मा

मिलता तो गुरु को खरी-खोटी सुनाया करती थी।

अमीर की दूसरी लड़की अलिवेणी सरल स्वभाव की थी। वह अपनी बड़ी बहन से डरती थी। केशव और गुरु पर रहम खाती थी। सब की आँख बचाकर वह उनको कुछ न कुछ खिलाया करती थी। गुरु वंशी हाथ में ले गीत गाता तो वह तन्मय होकर सुना करती थी।

एक दिन सूरज डूबने को था। दोनों भाइयों ने घाटी से घर लौटते हुये अपने पशुओं का हिसाब किया तो उनमें एक भेड़ कम थी। गुरु ने रोनी सूरत बनाकर केशव से कहा—"अब क्या किया जाये? मालिक को मालूम होगा तो चमड़ी उधेड़ देंगे।"

"अभी घर जाने का वक्त नहीं हुआ है। कोई भेड़िया उठा ले गया होगा! नहीं तो भेड़ कैसे गायब हो जाती? भेड़िये का निशान देखते उसके पीछे चलेंगे, चलो।" केशव ने कहा। जल्द ही उन्हें भेड़िये के निशान दिखायी दिये। उन निशानों के पीछे वे जंगल में गये।

"भेड़िये की गुफा तक जाकर उसे मार करके ले जावें तो मालिक डाटेंगे नहीं। भेड़िये का चमड़ा भेड़ के चमड़े से किसी हालत में कम नहीं है।" केशव ने अपने छोटे भाई को धीरज बंधाते हुये कहा।

लेकिन गुरु की हिम्मत नहीं पड़ती थी। वह बोला—"अंधेरा फैलता जा रहा है। घर वाले डाटेंगे।"

केशव ने चाबुक झाड़ दिया और कहा—"भेड़िये का पता लगाये बिना मैं वापस न लौटूंगा।"

अचानक वे एक घर के सामने जाकर रुक गये। भेड़िये के निशान वहाँ गायब हो गये थे।

"यहाँ पर शायद कोई मुनि हो और शायद हमें रात को यहाँ पर सोने दे।" ये शब्द कहते केशव ने दर्वाज़ा खटखटाया। दर्वाज़ा खुल गया। लेकिन अन्दर कोई न था। पर चूल्हा जल रहा था। भेड़ का चमड़ा एक कोने में पड़ा हुआ था। उसका माँस चूल्हे पर पक रहा था।

"यह हमारी भेड़ का माँस है, गुह! वह भेड़िया मुझे दिखायी दे तो उस की खबर लूँगा।" केशव ने कहा।

"इस घर में भेड़िया क्यों कर होगा?" गुह ने अपना संदेह प्रकट किया।

"हम तो भेड़िये के निशान देखकर ही तो इस घर में पहुँचे।" केशव ने अपना भोलापन प्रकट करते हुए कहा।

"मुझे डर लगता है, भैया। हम वापस चले जायेंगे तो अच्छा होगा।" गुह ने समझाया।

"मेरे चाबुक के रहते मुझे किसी का डर नहीं है। कम से कम भेड़ का मूल्य लेकर यहाँ से चले जायेंगे।" केशव ने छोटे को समझाया।

"इस घर में न मालूम कौन है? उसके दीखने तक हमें कहीं छिप जाना अच्छा होगा।" गुह ने सलाह दी।

यह सलाह केशव को भी अच्छी लगी। वे दोनों सीढ़ी पर चढ़कर अटारी में बैठ गये।

थोड़ी देर बाद दर्वाज़ा ढकेल कर एक मादा भेड़िया अन्दर आयी। उसने एक बार जंभाइयाँ लीं और अपना शरीर झाड़कर एक सुंदर युवती के रूप में बदल गयी।

अटारी के छेदों से यह सब देखनेवाले भाई डर के मारे काँप उठे। उन लोगों ने सोचा कि यदि औरत भेड़िया बन सकती है, तो वह कोई जादूगरनी होगी।

उस युवती ने चूल्हे में लकड़ी भर दी, कोने में से दिया निकाल कर, उसे जलाया।

इसके बाद चूल्हे से मांस की हंडी निकाल कर खाकड़-तोड़ खाने लगी। उस युवती को मांस खाते देख दोनों भाइयों की जीभों में से लार टपकने लगी। वे भी भूख से परेशान हो गये थे।

अचानक युवती ने अटारी की ओर सर उठा कर देखा और कहा—"तुम दोनों अब नीचे उतर आओ।"

दोनों भाइयों के कलेजे धड़कने लगे। "इसी वक्त, मेरा भोजन हो गया है। जो कुछ बचा है, तुम दोनों खा लो।" युवती ने कहा।

उस युवती की बातों पर उन्हें यकीन नहीं हुआ। लेकिन लाचार होकर उसके कहे अनुसार उन्हें करना पड़ा। इसलिए आगे केशव और पीछे गुह अटारी से नीचे उतर आये।

"तुम अपने हाथ का चाकू उस कोने में रख दो।" युवती ने आदेश दिया। परन्तु केशव ने और ज़ोर से उसे पकड़ लिया। युवती के हाथ हिलाते ही केशव के हाथ से खिसक कर वह चाकू दूर कोने में जा गिरा। युवती ने हंसते हुए कहा—"मेरे कहे मुताबिक करना तुम दोनों के लिए अच्छा होगा। खैर! अब खाना खा लो।"

"वह तो हमारी भेड़ है।" केशव ने अपनी हिम्मत का परिचय देते हुए कहा।

"तुम सच कहते हो। तुम्हारी भेड़ को हड़पनेवाली मायावी भेड़िया मैं ही हूं। लेकिन मेरा पता लगाकर तुम दोनों का यहां पर आना मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरा रहस्य तुम दोनों को मालूम हो गया है। लेकिन और किसीसे न कहना। कहोगे तो मैं तुम दोनों को यहां से हिलने भी न दूंगी।" युवती ने समझाया।

दोनों भाई मौन रहे।

"लगता है, तुम दोनों बुद्धिमान हो! तुम मेरा रहस्य किसी से न बताओगे तो तुम्हें बढ़िया इनाम दूंगी। यह बताओ

कि तुम दोनों को कौन चीज़ सब से ज़्यादा पसंद है?" भेड़ियेवाली युवती ने पूछा।

"हमारे पास अपनी कहनेवाली कोई चीज़ नहीं है। मुझे सबसे ज़्यादा पसंद यह चाबुक ही है!" केशव ने कहा।

"तब तो मैं तुम्हारे चाबुक को बड़ी ताकत दे देती हूँ। कोई तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध काम करने को तैयार हो तो चाबुक को हिलाकर "ठहर जाओ।" कहोगे तो वह आदमी मूर्तिवत् खड़ा रह जायगा। जब तक तुम 'हिलो' नहीं कहोगे, तब तक वह जड़ की तरह रह जायगा। अच्छा, छोटे भाई, तुम बताओ। तुमको कौन चीज़ पसंद है?" युवती ने पूछा।

"यह बंसी ही।" गुरु ने कहा।

"तब तो आज से तुम जब भी बंसी बजाओगे तो चाहे कोई भी क्यों न हो, उसे तुम्हारी इच्छा के अनुसार करना पड़ेगा। लेकिन एक बात याद रखो, तुम लोग इन शक्तियों का दुरुपयोग न करो। उन ताकतों के ज़रिये अच्छे लोगों की हानि न करो। ऐसा करोगे, तो वे शक्तियाँ जाती रहेंगी। एक बात यह भी याद रखो। तुम लोग आज रात को यहीं रहो, और कल सुबह सूर्योदय के पहले ही यहाँ से चले जाओ। इस घर में सूरज की किरणों के पड़ते ही मैं भेड़िया बन जाऊँगी। मेरे भेड़िया बन जाने के बाद मेरी आँखों के सामने रहोगे, तो मैं तुम्हें शायद चीरकर खा डालूँगी। उस वक्त मेरा स्वभाव भेड़िये का होगा।" उस युवती ने उन्हें सचेत किया।

वे दोनों भाई रात को वहीं सोकर सूर्योदय के पहले ही वहाँ से चले गये।

उन भाइयों को देखते ही उनका मालिक क्रोध में आया। लाठी लेकर उनके सामने आकर बोला—"कमबख्त, रात-भर कहाँ रहे? तुम्हारा खून पी जाऊँगा।"

पिता को उन्हें डांटते देख बड़ी लड़की दुर्गा खुश हुई। दौड़ते हुए वहाँ आ पहुँची। उसके पिता को उन भाइयों को पीटते देख वह खुश होना चाहती थी। लेकिन छोटी लड़की अलिवेणी कांपते अपने कमरे में गयी और किवाड़ बंद किये।

केशव ने जब देखा कि मालिक लाठी लेकर उनको पीटने आ रहा है तो उसने चाबुक झाड़ दिया और कहा—"ठहरो।" तुरंत वह अमीर किसान शिला की प्रतिमा की भांति खड़ा रह गया! उसका उठा हुआ हाथ उठा ही रह गया। उसके पैर मानों जमीन से चिपक गये थे।

"अरे, यह क्या हो गया मुझे?" किसान ने कहा। उसका मुँह बंद नहीं हुआ था।

"यह वचन दो कि हमको न पीटोगे। तब हम तुमको चलने-फिरने देंगे।" केशव ने समझाया।

"यह कैसा जादू है? मैं वचन नहीं दे सकता, तुम्हारा चमड़ा उधेड़ दूँगा। तुम्हारी जान लूँगा।" अमीर ने कहा।

"तब तो तुम्हारी जान के निकल जाने तक यहीं रहो। मेरा क्या जाता है?" यह कहते केशव गुरु का हाथ पकड़कर चला गया।

अमीर किसान ने घबराते हुए उसे वापस बुलाया और कहा—"मत जाओ, केशव! मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि तुमको नहीं पीटूँगा।"

"हमको नाहक कभी भी पीटोगे तो तुम्हारा यही हाल होगा।" यह कहकर उसने चाबुक झाड़ा। फिर बोला—"अच्छा, हिलो।" अमीर के हाथ-पैर चलने लगे। झट वह केशव पर कूदकर उसके हाथ का चाबुक छीनने लगा।

तब गुरु बंसी बजाने लगा। उस गीत के सुनते अमीर के मन में कोई व्यथा

और उन भाइयों पर अगाध सहानुभूति पैदा हो गयी। उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी।

यह सब देखनेवाली दुर्गा बोली—"पिता जी, आप यह क्या होते जा रहे हैं? क्या हो गया?"

"बेचारे, ये दोनों भोले हैं! इनको क्यों पीटना है! बेटे, आ जाओ, खाना खा लो।" अमीर ने कहा।

दोनों ने भीतर जाकर पेट भर खाना खाया। आज तक जो अमीर उन्हें खाना ठीक से न देता था, वही आज उन्हें भरपेट जबर्दस्ती खाना देने लगा। लेकिन उनके भोजन कर चले जाने के बाद फिर उसका स्वभाव पूर्ववत् होने लगा।

"आज मैं क्यों ऐसा बदल गया हूँ? कारण क्या है?" अमीर ने अपनी बड़ी बेटी से पूछा।

"बात कुछ नहीं, मुझे लगता है कि उस देहाती के चाबुक और मूढ़ की बंसी में कोई मंत्र है। उनको उनके हाथों से छीन न लें तो वे हमें जैसा चाहेंगे, वैसे नचायेंगे! देखिये, आखिर वे हमसे घर-द्वार तक छीन लेंगे।" दुर्गा ने कहा।

दुर्गा ने इसके बाद अपने पिता को समझाया कि चाबुक और बंसी उन भाइयों

से छल-कपट द्वारा छीन लेना होगा। वह दगा देकर केशव से चाबुक लेगी और गुरु से बंसी छीनने को अलिवेणी को नियुक्त करेगी।

दुर्गा ने अलिवेणी को बुलाकर जब यह समाचार सुनाया, तब वह चकित हो गयी। लेकिन वह अपनी बहन का विरोध करने की हिम्मत नहीं रखती थी। इसलिए उसने सर हिलाया।

दूसरे दिन दुर्गा एक टोकरी भर बढ़िया खाना लेकर घाटी में गयी और केशव के बाजू में बैठकर प्रेम से बोली—"देखो केशव, हमारे गाँव में यों तो कई जवान हैं, लेकिन मैं तुम से जितना प्यार करती हूँ, उतना उन लोगों से नहीं करती।" ये शब्द कहते वह जो खाना लायी थी, उसे केशव को खिलाने लगी।

केशव ने जल्दबाजी में वह सारा खाना खा डाला। पर उसने कोई जवाब न दिया। वह जानता था कि दुर्गा उसको धोखा दे रही है।

"मेरी बात पर यकीन नहीं करोगे? तुम अगर पिताजी का विरोध न करोगे तो तुमसे शादी करने की मेरी बड़ी इच्छा है।" दुर्गा ने केशव के चाबुक वाला हाथ पकड़कर कहा।

केशव ने अपना चाबुक दूसरे हाथ में बदल लिया।

"तुम मुझे मूर्ख समझती हो न?" केशव ने दुर्गा से पूछा।

"छी, छी, यह तुम क्या कहते हो, केशव? जरा, वह चाबुक तो मेरे हाथ में दे दो? तुम्हारे जैसे मैं भी उसे एक बार झाड़ कर देख लूँगी?" दुर्गा ने कहा। उसने केशव के ऊपर झुक कर बड़े ही प्यार से चाबुक हाथ में ले लिया। विजय के गर्व में अट्टहास करते चाबुक को झाड़ दिया, लेकिन उससे कोई आवाज न निकली।

केशव ने दुर्गा के हाथ से चाबुक छीन लिया और गुस्से में आकर बोला—"अब तुम चले जाओ। मुझे मालूम है कि तुम मेरे लिए आज बढ़िया खाना क्यों लायी हो। आइंदा कभी यहाँ पर न आओ। मैं तुम से बात तक नहीं करूँगा। यहाँ से चली जाओ।"

दुर्गा जैसे केशव के पास खाना ले आयी, वैसे अलिवेणी भी गुह के पास खाना ले आयी। वह इसके पहले भी कई बार उसके पास आयी थी। दोनों अगल-बगल बैठे बड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करते रहे। तब अलिवेणी प्यार से बोली—"गुह, तुम मुझसे प्यार करते हो?"

"मेरे बड़े भैया के बाद अगर मैं दुनिया में किसी से ज्यादा प्यार करता हूँ तो तुम्हीं से करता हूँ। क्या तुम नहीं जानती?" गुह ने पूछा।

"अगर मैं पूछूँ तो क्या तुम मुझे यह बंसी दोगे?" अलिवेणी ने पूछा।

"चाहे तो ले लो।" ये शब्द कहते गुह ने बंसी अलिवेणी के हाथ में दे दी।

अलिवेणी बंसी लेकर रोने लगी। गुह ने इसका कारण पूछा, लेकिन अलिवेणी न बता सकी। आखिर वह बंसी गुह को लौटाते हुए बोली—"गुह, मुझे इसकी जरूरत नहीं है। तुम्हारी जाँच करने के लिए मैंने पूछा। बस, और कोई कारण न था। मैं जानती हूँ कि इसमें मंत्र-शक्ति है। इसकी तुम्हें बड़ी जरूरत है।"

"मंत्र-शक्ति की बात तुम कैसे जानती हो?" गुह ने अलिवेणी से पूछा।

"मेरे पिताजी और बहन ने मुझे बताया है।" अलिवेणी ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा कहना सच है।" गुह ने यह कहते सारी बातें अलिवेणी को समझायीं।

गुह से सारी कथा सुनकर अलिवेणी ने कहा—"गुह, तब तो तुम को इन भेड़ों को

"मैं आइंदा आप की भेड़ें नहीं चराऊँगा। मेरे साथ अलिवेणी का विवाह कर दीजिये। हम दोनों शादी करना चाहते हैं।" गुह ने पूछा।

अमीर किसान गुस्से से आग बबूला हो उठा। उसी वक़्त गुह ने बंसी निकालकर बजाना शुरू किया। किसान का दिल मक्खन की तरह पिघलने लगा। उसने गुह का हाथ पकड़कर कहा—"ज़रूर तुम दोनों शादी कर लो! सुख से रहो। मैं नहीं चाहता हूँ।"

"यह तुम क्या कहते हो, पिताजी!" दुर्गा चिल्ला उठी। उसी वक़्त केशव भी वहाँ आ पहुँचा।

"मैं आपकी गायें नहीं चराऊँगा। मैं और मेरे भाई हम दोनों कहीं और चले जायेंगे और अपने दिन काटेंगे!" केशव ने अपने मालिक से कहा।

"अरे तुम जाओगे कैसे? मैं तुम्हारे भाई के साथ अलिवेणी की शादी करना चाहता हूँ।" मालिक ने कहा।

"अच्छी बात है! तब तो मैं अकेले चला जाऊँगा।" केशव ने कहा।

दुर्गा पागल की तरह चिल्ला पड़ी—"तुम दोनों चले जाओ! अलिवेणी, तुम

चराने की क्या ज़रूरत है? तुम अपनी बंसी के बल पर मेरे *पिताजी* से कुछ भी करा सकते हो। तुम उनसे पूछो कि वे मेरे साथ तुम्हारी शादी करें।"

"तुमको आपत्ति न हो तो क्यों नहीं पूछूँगा?" ये बातें कहते गुह अलिवेणी के साथ अमीर के घर की तरफ़ चल पड़ा।

उनके घर पहुँचने के पहले ही दुर्गा ने घर जाकर अपने पिता से कहा—"मैंने सारा मंत्र नाश कर डाला है। न मालूम अलिवेणी ने क्या किया है।"

इतने में अलिवेणी और गुह एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले वहाँ आ पहुँचे।

भी इस बेवकूफ के साथ शादी करना चाहती हो तो तुम भी चली जाओ।"

"हाँ, हाँ। मैं जरूर शादी करूँगी।" अलिवेणी ने दृढ़ता से कहा।

"मैं चाहे, मादा भेड़िया भी बन जाऊँ तो भी उससे शादी न करूँगी।" दुर्गा ने रोष में आकर कहा।

दुर्गा ये बातें कह ही रही थी कि बाहर से भेड़िये की चिल्लाहट सुनायी दी। दूसरे क्षण एक बड़ी मादा भेड़िया अन्दर आ धमकी।

"मैं भी मादा भेड़िया हूँ। केशव मान जाय तो मैं उससे शादी करूँगी।" उस मादा भेड़िये ने मानव की बोली में कहा। केशव ने उस भेड़िये को पहचान लिया।

"मुझे पसंद है।" केशव ने हिम्मत के साथ कहा।

"तब तो मुझे चूम लो, केशव!" यह कहते भेड़िये ने अपने आगे के दोनों पैर उठाकर केशव के कंधों पर रख दिये। केशव ने साहस करके भेड़िये को चूम लिया। झट वह मादा भेड़िया एक युवती के रूप में बदल गयी।

"केशव, तुमने मेरा शाप दूर किया। एक जादूगर ने मुझसे नाराज होकर मुझे भेड़िया बनाया। मैं रात में भेड़िये के रूप में और दिन में युवती बनकर जीती रही। एक समय मैं भी दुर्गा की तरह क्रूर स्वभाव की नारी थी। इस शाप को किसी दूसरे में बदलने तक मुझे मुक्ति नहीं है।" यह कह कर दुर्गा की ओर देखते फिर बोली–"आज से भेड़िया बन कर रहने की बदकिस्मती तुम्हारी है। जब तक तुम्हारा स्वभाव न बदलेगा और कोई तुमको न चूमेगा, तब तक तुम्हारा यह शाप दूर न होगा।"

देखते देखते दुर्गा भेड़िये के रूप में बदलकर भाग खड़ी हुई।

झूठी गवाही

एक नगर में एक धनी व्यापारी था। वह रत्नों का व्यापार करके बहुत बड़ा धनी बन गया था। उसने जो धन कमाया था, उसमें न्याय मार्ग से कमाया हुआ धन कम और भोले लोगों को दगा देकर कमाया हुआ धन ज़्यादा था।

व्यापारी जिस घर में रहता था, वह उसके दादा-परदादाओं के ज़माने का था। उसके घर के पड़ोस में एक किसान की ज़मीन थी। उसे खरीदने का व्यापारी ने बड़ा प्रयत्न किया। वह जगह भी किसान के दादा-परदादाओं के ज़माने की थी। उसे बेचना किसान को कतई पसंद न था। फिर भी किसान ने सोचा कि अगर अमीर बड़ी रकम दे तो उससे दूसरी जगह कम दाम में ज़मीन खरीद कर उस में से थोड़ी रकम बचा ले। परंतु अमीर ने उस जगह के लिए कम दाम देने की इच्छा प्रकट की। इससे नाराज़ हो कर किसान ने कहा—"मैं अपनी ज़मीन बेचना नहीं चाहता, चले जाओ।"

व्यापारी को किसान पर बड़ा क्रोध आया। उसने किसान से बात करना तो बंद किया, उलटे उसे कई तरह से सताने गालियाँ भी देने लगा। इससे भी व्यापारी संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि किसान को और तंग करना चाहा।

एक दिन व्यापारी ने अपने मित्र कमलाकांत को बुलाकर कहा—"मेरे पड़ोसी किसान बहुत दिनों से मुझे तंग करता है। इसे उचित सबक सिखाना चाहता हूँ। वह मेरा पड़ोसी है, इसलिए मैं उस पर यह इलज़ाम लगाऊँगा कि उसने मेरा माणिक चुराया है। क्या तुम गवाही दे सकते हो? तुम जानते हो कि गवाही के बिना न्यायाधिकारी कैसे

सुशीला भाटिया

फ़रियाद नहीं सुनेगा। तुमको इस झूठी गवाही के लिए अच्छा इनाम भी दूँगा।"

कमलाकांत ने सोचा कि व्यापारी की बात मानने से उसे थोड़े से रुपये मिल जायेंगे। इस लोभ में पड़कर कमलाकांत ने झूठी गवाही देने को मान लिया।

दूसरे दिन ही व्यापारी ने राजा के पास जाकर शिकायत की कि उसके पड़ोसी किसान ने उसके घर में घुस कर माणिक चुराया है और उसे चुराते हुए कमलाकांत ने देख लिया है।

राजा ने तुरंत कमलाकांत को बुलाकर पूछा—"क्या यह सच है कि इस व्यापारी के माणिक को किसान ने चुराया है?"

कमलाकांत ने कहा—"जी हुजूर! किसान को माणिक चुराते मैंने अपनी आँखों से देखा है।"

"वह माणिक कैसा था?" राजा ने पूछा।

कमलाकांत घबरा गया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद अपनी बगल में से एक छड़ी निकालकर उसे दिखाते हुए बोला—"सरकार, वह माणिक बिलकुल इस छड़ी के जैसे था।"

राजा ठठाकर हँस पड़ा और व्यापारी से बोला—"क्यों व्यापारी जी! तुम इतने लंबे माणिक भी बेचते हो?"

व्यापारी डर के मारे काँपने लगा।

कमलाकांत ने राजा से कहा—"जी सरकार, माणिक ऐसे ही तो होते हैं? एक बार मैंने यह छड़ी माँ को दी तो मेरे पिता ने मुझे डाँट बतायी थी—"बेटे, माणिक जैसी छड़ी माँ को दी है।"

व्यापारी का धोखा प्रकट हो गया। देखते-देखते उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया। भोले आदमी से झूठी गवाही दिलाने के कारण राजा ने नाराज हो व्यापारी को कड़ी सजा दी।

वर का चुनाव

प्राचीन काल में एक गाँव में एक बड़ा पंडित था। उसने अनेक राजाओं के दरबारों में जाकर कई पंडितों को हराया और कई उपाधियाँ तथा पुरस्कार पाये।

उस महा पंडित का एक लड़का था। उसका नाम रामशास्त्री था। रामशास्त्री था तो पंडित का पुत्र, लेकिन अव्वल दर्जे का मूर्ख था। आसपास के सभी गाँववालों को मालूम हो गया कि रामशास्त्री बड़ा मूर्ख है, इसलिए उसकी शादी न हो पायी।

महा पंडित यह सोचकर परेशान था कि लड़के की शादी कैसे की जाय। एक दूर के गाँव में एक पंडित परिवार था। उस परिवार की कन्या के साथ अपने लड़के की शादी कराने के लिए दो-चार मित्रों से प्रार्थना की। उन मित्रों ने उस पंडित परिवार में जाकर कहा—"फलाने पंडित के पुत्र के साथ आप की कन्या का विवाह करें तो बड़ा अच्छा होगा।"

पंडित परिवार के लोग यह समाचार सुनकर बहुत खुश हुए और कहला भेजा कि कन्या को देखने के लिए वर आ जावे। रामशास्त्री कन्या को देखने गया। कन्या के भाइयों ने उसका अच्छा आदर किया और अपने घर से कई पुस्तकें लाकर उसके सामने रख दीं।

रामशास्त्री ने एक एक किताब निकाल कर पूछना शुरू किया—"यह कैसी पुस्तक है?" उनके जवाब सुनकर वह सोचने लगा कि यह कोई बड़ी अच्छी पुस्तक होगी। इस प्रकार कई किताबें देखने के बाद एक पुस्तक उठाकर पूछा—"यह कैसी पुस्तक है?"

"यह अलिखित है।" कन्या के भाइयों ने समझाया।

किरण कुमारी

रामशास्त्री यह नहीं जानता था कि अलिखित का मतलब जो नहीं लिखी गयी है, उसने पूछा—"इसे किसने लिखा ?"

कन्या के भाइयों को मालूम हुआ कि रामशास्त्री महान मूर्ख है। उन्होंने रामशास्त्री को घर भिजवा दिया।

* * *

एक राजा के एक पुत्री थी। उसके विवाह के योग्य होते ही राजा ने उसका विवाह करना चाहा। "मैं जो सवाल करूँगी, उसका जवाब देनेवाले के साथ में शादी करूँगी। इस प्रकार का ढिंढोरा पिटवा दीजिये।" राजकुमारी ने कहा।

ढिंढोरा पिटवाया गया। कई राजकुमार उससे विवाह करने के ख्याल से आये। उनसे राजकुमारी ने यों कहा :

"मैं एक छोटा-सा हिसाब पूछूँगी। मेरे हिसाब बताने के बाद 'एक, दो और तीन' कहने के अन्दर आप में से जो युवक सही जवाब देगे, उसी से विवाह करूँगी। अब हिसाब सुनिये—'एक तालाब में एक मुनि ने एक कमल रोपा। वह दूसरे दिन तक दो कमल हो गया। तीसरे दिन चार कमल हुए। इस तरह कमल के फूलों की संख्या रोज दुगुनी होती गयी। तीसवें दिन तक सारा तालाब कमल के फूलों से भर गया। मेरा सवाल यह है कि कितने दिनों में फूलों से तालाब का आधा भाग भर गया?" सवाल पूछकर राजकुमारी ने कहा—"एक।"

एक ने जवाब दिया—"पंद्रह दिनों में।" बाकी लोग जल्दी जल्दी हिसाब लगाते सोचने लगे कि तीस दिनों में कितने कमल लगे। उनमें आधे कितने?"

राजकुमारी ने कहा—"दो।"

"उनतीस दिनों में।" एक राजकुमार ने झट कहा।

राजकुमारी ने उस युवक को अपने पति के रूप में चुना।

सत्यवती ने लजाते हुए नाव चलाते समय पराशर महर्षि के द्वारा कृष्णद्वैपायन को जन्म देने का समाचार सुनाया और कहा–"कृष्ण द्वैपायन नामक व्यास मेरा पुत्र है। उसने घोर तपस्या की है। वेदों का विभाजन किया है। उसके द्वारा हम भरतवंश की रक्षा करेंगे।"

इस पर भीष्म ने मान लिया। सत्यवती का स्मरण करते ही कृष्ण द्वैपायन नामक व्यास आ पहुँचा और पूछा–"माँ, आपने मेरी याद क्यों की है? आज्ञा दीजिये। मैं आपकी आज्ञा का तुरंत पालन करूँगा।" सत्यवती ने व्यास से अपना उद्देश्य बताया। व्यास ने मान लिया।

इसके बाद सत्यवती ने अंबिका को समझाया कि वह खूब आने को अंगीकार करे। उसके पास 'जेठा' आयेगा और उसके जरिये संतान पैदाकर वंश का उद्धार करे। अंबिका ने सोचा कि वह 'जेठा' भीष्म ही होगा, लेकिन हुआ क्या, उस रात को अंबिका के कमरे में व्यास आ पहुँचा। व्यास की लंबी दाढ़ी, काली आकृति, लाल आँखें देखकर अंबिका डर गयी और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। इसके पहले अंबिका ने कभी व्यास को न देखा था। उसने आँखें बंद कर ली थी, इस दोष के कारण उसका पुत्र धृतराष्ट्र अन्धा ही पैदा हो गया।

दुर्योधन आदि का जन्म
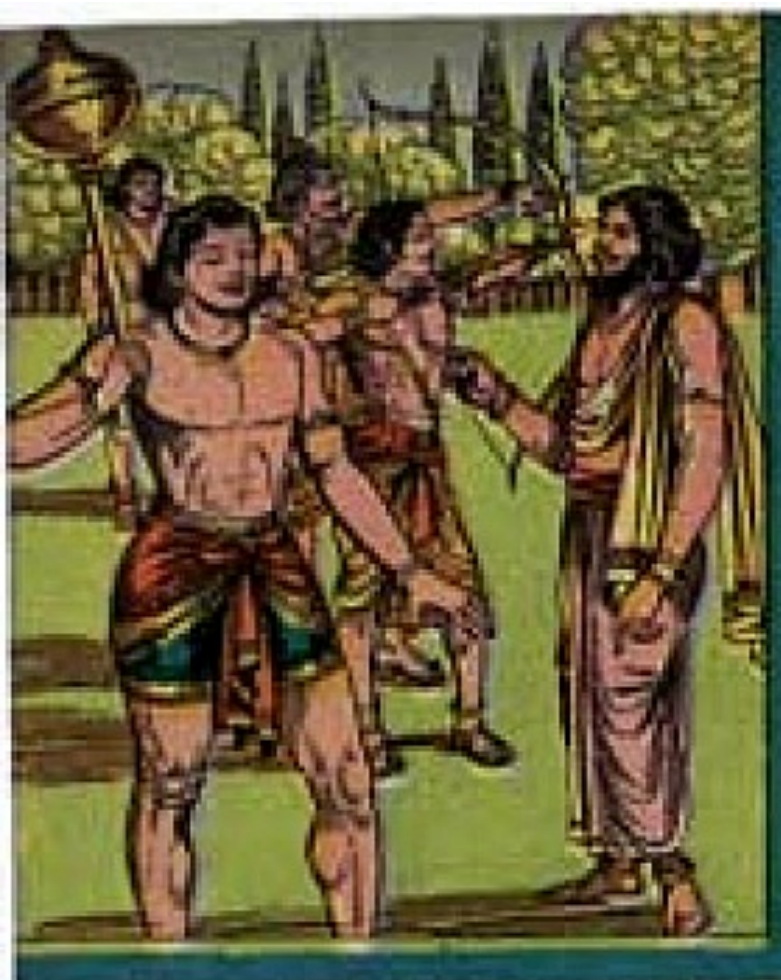
सत्यवती अंधे लड़के को देख दुखित हो गयी। उसने फिर व्यास की याद की। इस बार सत्यवती ने अंबालिका से कहा— "आज रात को तुम्हारे पास एक मुनि आयेगा। उसके जरिये एक सुंदर पुत्र को जन्म देकर तुम भरत वंश की रक्षा करो।"

उस रात को अंबालिका ने व्यास के रूप को देख आँखें तो बंद नहीं कीं, लेकिन उसका शरीर सफ़ेद पड़ गया। इसलिए सफ़ेद शरीरवाला पांडु उसके गर्भ से पैदा हुआ।

इस पर भी सत्यवती को संतोष नहीं हुआ। उसने इस बार अंबिका को संकेत करते हुये कहा— "इस बार तो कम से कम मुनि के द्वारा एक अच्छे पुत्र को जन्म दो।" लेकिन अंबिका के व्यास की याद करते ही उसका शरीर कांप उठा। उसने उस रात को अपने सोने के कमरे में अपनी दासी को भेजा। उस दासी के गर्भ से व्यास के द्वारा विदुर का जन्म हुआ।

इस तरह धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर दिन ब दिन बढ़ने लगे। भीष्म राज्य का भार ग्रहण कर सुख और शांति के साथ शासन करने लगा। भीष्म ने उन राजकुमारों को समयोचित सभी प्रकार की विद्याएँ वेद, वेदांग और नीति शास्त्रों का अध्ययन कराया। उन तीनों में धृतराष्ट्र बड़ा बलवान निकला, पांडु धनुर्विद्या में प्रवीण बना और विदुर नीति-शास्त्र का पारंगत हुआ।

कुछ साल बीत गये। जब राजकुमार बड़े हुये तब उनमें से एक का राज्याभिषेक करना पड़ा। विदुर दासी-पुत्र था। धृतराष्ट्र जन्म से अंधा था। इसलिए उन दोनों को छोड़कर भीष्म ने पांडु का राज्याभिषेक किया।

विवाह के योग्य हुये लड़कों को देख भीष्म सोचने लगा कि उनके योग्य कन्याएँ

कहाँ पर है? गांधार राजा सुबल के गांधारी नामक एक पुत्री थी। भीष्म को मालूम हुआ कि गांधारी ने सौ पुत्र पाने का वर शिवजी से प्राप्त कर लिया है। भीष्म ने कुछ ब्राह्मणों को सुबल के पास भेज कर पुछवाया कि गांधारी का विवाह धृतराष्ट्र के साथ करें। राजा सुबल जानता था कि धृतराष्ट्र अंधा है, फिर भी उसका वंश बड़ा है। यह सोचकर उसने अपनी पुत्री का विवाह धृतराष्ट्र के साथ करने का निश्चय किया। गांधारी को जब मालूम हुआ कि उसके होनेवाला पति अंधा है, तो उसने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली और उसने भी अंधी बनकर रहने का निश्चय किया। गांधारी का भाई शकुनि ने उसे हस्तिनापुर ले जाकर उसका विवाह कराया। इसके बाद शकुनि भीष्म का सत्कार पाकर, गांधारी को हस्तिनापुर में छोड़कर अपने देश को लौटा।

अब पांडु का विवाह करना था। भीष्म को कुंती नामक यादव कन्या का समाचार मिला।
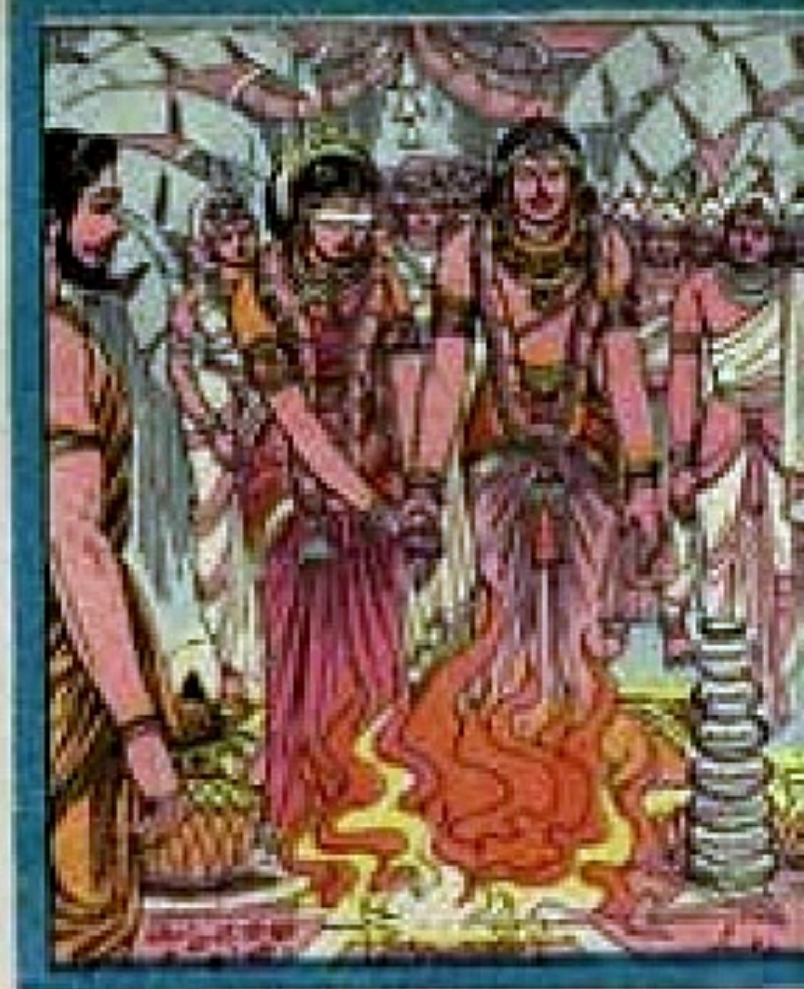
यादव वंश का प्रमुख व्यक्ति शूर वसुदेव का पिता था। उसके पृथा नामक एक पुत्री थी। शूर का फुफेरा भाई कुंतिभोज था। उसके कोई संतान न थी। इसलिए उसने पृथा को अपनी पुत्री के रूप में पाल-पोसकर बड़ा किया। कुंतिभोज के यहाँ आनेवाले अतिथियों का पृथा सत्कार किया करती थी। एक बार दुर्वासा ने आकर उसके आदर-सत्कारों से प्रसन्न हो उसे एक मंत्र सिखाया और कहा—"बेटी! तुम इस मंत्र का जाप करके जिस देवता का स्मरण करोगी, वह आकर तुमको पुत्र प्रदान करेगा।"

मुनि की बातों की जाँच करने के ख्याल से एक दिन कुंती ने सूर्य का
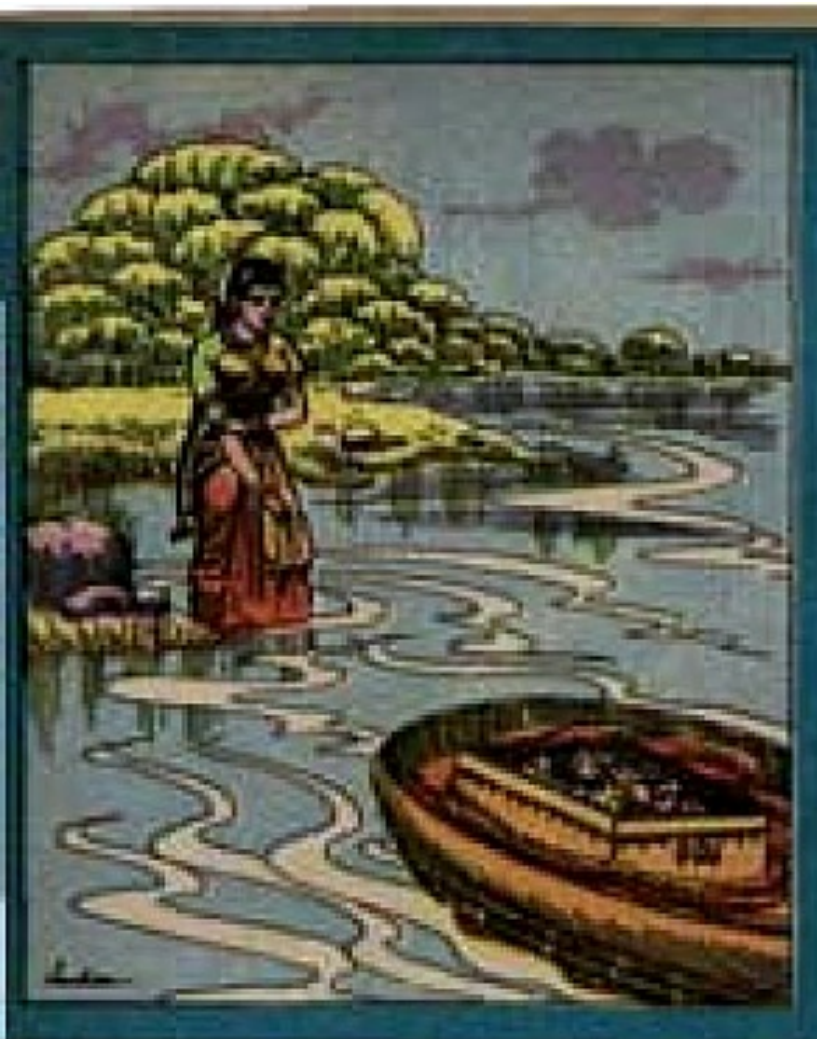
इस घटना के बाद कुंतिभोज ने अपनी पालिता पुत्री के स्वयंवर का इंतजाम किया। उस स्वयंवर में भाग लेने पांडु भी पहुँचा। कुरुवंशी पांडु देखने में सुंदर और तेजस्वशाली था। कुंती ने पांडु के गले में वरमाला डाल दी। कुंतिभोज ने उन दोनों का विवाह वैभव के साथ किया और अनेक उपहार देकर उनको हस्तिनापुर में भेजा। कुंती के लिए अलग एक अंतःपुर का प्रबंध किया गया। उस में कुंती और पांडु सभी प्रकार के सुख भोगने लगे।

स्मरण कर मंत्र जपा। तुरंत सूर्य उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। उसने पुत्र की मांग नहीं की। फिर भी सूर्य के द्वारा वह गर्भवती हुई। ठीक समय पर कवच-कुंडल के साथ कुंती के गर्भ से एक पुत्र पैदा हुआ। कुंती घबरा गयी। उसने उस शिशु को एक पेटी में बंदकर नदी की धारा में छोड़ दी। वह पेटी एक सूतवंशी के हाथ लगी। सूत ने पेटी खोलकर देखा। सूर्य जैसे कांतिवाले उस शिशु को अपनी पत्नी राधा के हाथ सौंप दिया। उसने उस लड़के को पाला। वही लड़का कर्ण है।

भीष्म ने पांडु के एक और विवाह भी करने का निश्चय किया। मद्र राजा शल्य के एक बहन थी। भीष्म दल-बल समेत शल्य की राजधानी में पहुँचा। शल्य ने भीष्म की अगवानी की और अपने महल में सादर ले जाकर उसके आने का कारण पूछा।

"तुम अपनी बहन माद्री का विवाह हमारे पांडु के साथ करो।" भीष्म ने पूछा।

"इससे बढ़कर हमें चाहिए ही क्या? लेकिन कन्याशुल्क ग्रहण करने का हमारा रिवाज है। हमें कन्याशुल्क देकर मेरी
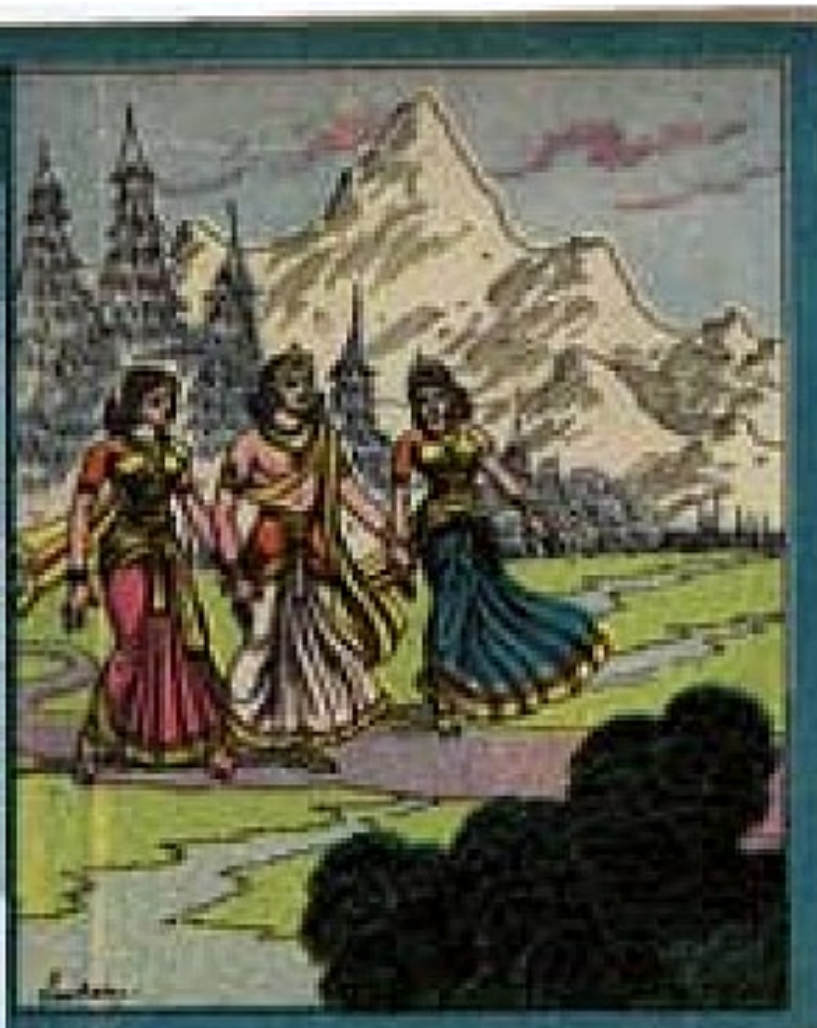
बहन को ले जाइये और अपने नगर में विवाह कर लीजिये।" शल्य ने कहा।

वंश के आचारों का पालन करना जरूरी है। इसलिए भीष्म ने मद्र राजा को सोना, हीरे-जवाहरात, आभूषण, वस्त्र और वाहन भेंट किये और माद्री को हस्तिनापुर में लाकर एक शुभमुहूर्त में पांडु के साथ उसका विवाह किया। पांडु अपनी दो पत्नियों के साथ सुखपूर्वक दिन काटने लगा।

अपनी पत्नियों के साथ कुछ समय तक सुख भोगने के बाद पांडु के मन में दिग्विजय करने की इच्छा पैदा हुई। उसने चतुरंगी सेना को लेकर युद्ध की भेरी बजवायी। भीष्म आदि बुजुर्गों व ब्राह्मणों को प्रणाम करके पांडु ने कई देशों को जीत लिया। इसके बाद मगध पर हमला करके वहाँ के राजा को मार डाला। मगध, काशी, पुंड्र वगैरह देशों को जीतकर, अपार धन-संपत्ति व भेंटों को लेकर राजा पांडु हस्तिनापुर को लौटा। भीष्म आदि ने पांडु का स्वागत करके उसका सम्मान किया। राजा पांडु ने अनेक देशों से जो धन संग्रह किया, उसे भीष्म, सत्यवती, विदुर तथा अपनी माताओं में बांट दिया। सब प्रसन्न हुए। उसी धन के साथ धृतराष्ट्र ने कई अश्वमेध यज्ञ किये।

इसके बाद राजा पांडु अपनी दोनों पत्नियों को साथ लेकर विहार करने हिमालयों के अरण्यों में चला गया। वहां पर पांडु बहुत दिन तक रहा। उसके लिए आवश्यक चीज़ें धृतराष्ट्र भेजा करता था।

उधर हस्तिनापुर में भीष्म ने देवक नामक राजा की पुत्री के साथ विदुर का विवाह किया।

एक दिन व्यास महर्षि धृतराष्ट्र के घर बड़ी भूख लेकर आ पहुँचा। गांधारी ने

सभी प्रकार के उपचार करके उसको संतुष्ट किया। व्यास ने प्रसन्न होकर गांधारी से वर माँगने को कहा। गांधारी ने अपने पति के समान योग्य सौ पुत्रों की माँग की।

कुछ समय बाद गांधारी गर्भवती हुई। दो साल तक वह गर्भवती ही रही। इसी बीच उसे समाचार मिला कि कुंती ने युधिष्ठिर नामक पुत्र को जन्म दिया है। यह सोचकर गांधारी दुखी हुई कि व्यास के वर देने पर भी उसका अभी तक प्रसव नहीं हुआ है, उसने अपने पति का परामर्श लिये बिना अपने गर्भ पर प्रहार किया। फलतः उसका गर्भस्राव हुआ। दो वर्ष तक जिस गर्भ को धारण किया, उस पिंड के टुकड़ों को उसने फेंकना चाहा। व्यास धृतराष्ट्र को देखने आ पहुँचा तो उसे यह समाचार मालूम हुआ।

"यह तुम क्या कर रही हो?" व्यास ने गांधारी से पूछा।

गांधारी ने रोते हुए उत्तर दिया—"आप ने मुझे सौ पुत्र पैदा होने का वर दिया। मैं दो साल से गर्भवती रहकर भी बच्चे पैदा न कर सकी। इसी बीच पांडु की पत्नी कुंती का एक सुंदर लड़का पैदा हुआ है। इस दुख से मैंने अपने पेट पर प्रहार करके गर्भस्राव किया है। आपके वर की बात तो मैं नहीं जानती, लेकिन पिंड के इस तरह टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं।"
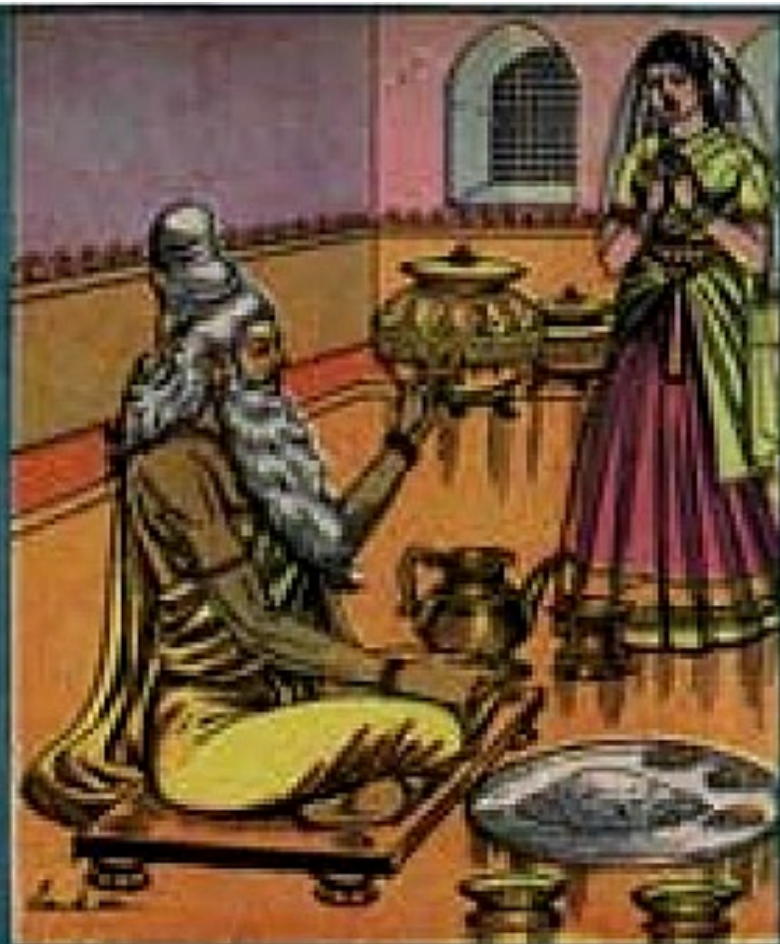
"मेरा वर कभी व्यर्थ नहीं होगा।" यह कहते व्यास ने गांधारी के गर्भ से गिरे सौ मांसखण्डों को एकत्र कर उन्हें पानी में साफ़ कराया। और प्रत्येक खण्ड को एक घी के बर्तन में रखवाया। इस पर गांधारी ने व्यास से पूछा—"क्या ये सौ टुकड़े सौ पुत्र होंगे। [illegible] एक पुत्री का भी अनुग्रह कीजिये। [illegible]

है कि दौहित्रियों के द्वारा भी पुण्यलोक की प्राप्ति होती है।"

व्यास ने गांधारी की इच्छा की पूर्ति होने का आशीर्वाद दिया। उन टुकड़ों को एक सौ एक कलशाकार बर्तनों में रखवाया और व्यास चला गया। एक साल के पूरा होते ही एक बर्तन से पहला लड़का पैदा हुआ। उसके पैदा होते ही कई अपशकुन होने लगे। उनको देख धृतराष्ट्र डर गया और भीष्म, विदुर, मंत्री, पुरोहित आदियों को बुलाकर पूछा—"हमारे वंश में इससे पहले ही युधिष्ठिर का जन्म हो चुका है। क्या इस लड़के को भी सिंहासन पर बैठने का योग है कि नहीं? सोच-समझकर बताइये।"

इस पर उन लोगों ने समझाया—"महाराज! इस लड़के के जन्मधारण के साथ ही दुश्शकुन दिखाई दे रहे हैं। यह वंश का नाश करनेवाला होगा। इसको त्याग दीजिये। सौ पुत्रों में से एक के न रहने से क्या हुआ?" विदुर ने भी यही बात समझायी। लेकिन पुत्र-प्रेम में पड़कर धृतराष्ट्र ने उनकी सलाहों की परवाह नहीं की।

इस प्रकार पहले दुर्योधन पैदा हुआ। बाद क्रमशः दुश्शासन, दुस्सह आदि पुत्र और दुश्शला नामक पुत्री पैदा हुई। गांधारी जिन दिनों में गर्भवती थी, उस समय उसकी सेवा करने के लिए धृतराष्ट्र ने एक वैश्य नारी को नियुक्त किया। दुर्योधन आदि जिस साल पैदा हुए, उसी साल उस नारी ने धृतराष्ट्र के द्वारा युयुत्सु नामक लड़के का जन्म दिया।

धृतराष्ट्र ने अपने सौ लड़कों को राजोचित विद्याएँ सिखाकर युवा अवस्था के होते ही योग्य कन्याओं के साथ उन सब का विवाह भी किया।

[५]

गांधीजी ने विदाई-समारोह में जो भाषण दिया, उससे प्रभावित होकर दक्षिण अफ्रिका के व्यापारियों ने उनसे निवेदन किया कि वे वहीं पर रहकर आन्दोलन चलावें। इस पर गांधीजी ने अपनी यात्रा एक महीने तक मुल्तवी कर दी। इस बीच में भारतीयों के विरुद्ध एक बिल विधान सभा में लाया जा सकता था।

इस प्रकार विदाई-उत्सव राजनैतिक समारोह के रूप में बदल गया। विधान सभा में प्रवेश कराये जानेवाले बिल का विरोध करने के लिए उस सभा में विचार-विमर्श हुआ। प्रिटोरिया में रहते गांधीजी ने प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को पूर्ण रूप से समझ लिया था। इसलिए वे जो आन्दोलन चलाना चाहते थे, उसकी योजना अच्छी तरह से तैयार की। उसका पहला कार्य विभिन्न जातिवाले भारतीयों के बीच एकता पैदा करने का था। उनमें हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, मद्रास से आये मजदूर, गुमाश्ते, व्यापारी, ईसाई सब तरह के लोग थे। इन सब में यह भाव पैदा करना जरूरी था कि वे सब पहले भारतीय हैं। दूसरा कार्य भारतीयों को मतदान से वंचित करने से होनेवाले परिणामों से भारतीयों, विवेकशील गोरों तथा नेटाल की सरकार को परिचित कराना था। तीसरा कार्य भारतीयों की बुरी हालत का परिचय व्यापक रूप में सबको प्राप्त हो जाय तथा इससे ग्रेट ब्रिटेन की जनता और सरकार की आत्मा में चेतना जागृत कर सके। भारत की सरकार को स्वतंत्र रूप से निर्णय करने का अधिकार नहीं है। लेकिन नेटाल के गोरों
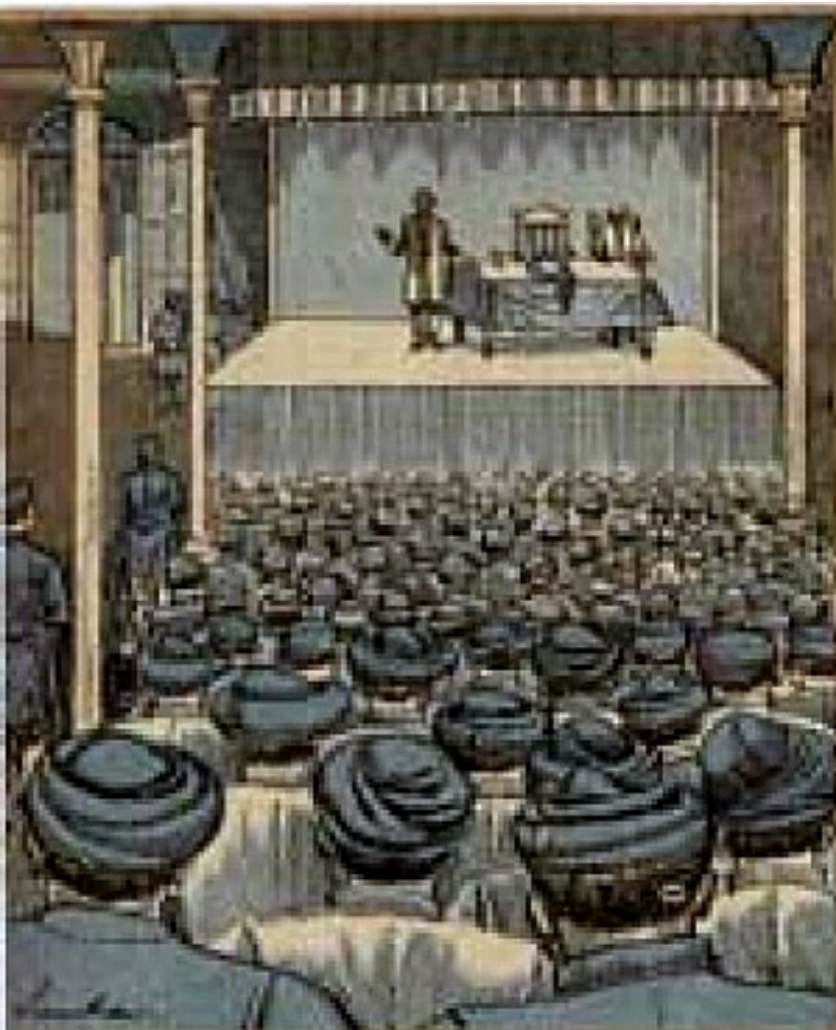
के फायदा के लिए कई भारतीयों को भारत सरकार ने प्रवासी होने का मौका प्रदान किया, इसलिए उनके भले-बुरे की जिम्मेवारी उन पर ज़रूर थी। अलावा इसके नेटाल सरकार की विधान सभा कोई क़ानून बनाये तो उसे रद्द करने का अधिकार ब्रिटिश सरकार को है। इसलिए गांधीजी ने सोचा कि दक्षिण आफ्रिका के भारतीयों को जाति-भेद की कठिनाइयों से ब्रिटिश सरकार रक्षा कर सकती है।

गांधीजी ने अपने आन्दोलन के ज़रिये ऐसी चेतना जगायी कि १८९४ दिसंबर में भारतीय राष्ट्रीय महासभा में भारतीयों के विरुद्ध प्रवेश कराये जानेवाले बिल के विरोध में एक प्रस्ताव पास किया गया। लंदन की "टाइम्स" नामक पत्रिका ने दक्षिणी आफ्रिका के भारतीयों की समस्याओं पर तीन वर्ष की अवधि में आठ बार संपादकीय लिखे।

नेटाल की विधान सभा को समर्पित करने के लिए गांधीजी ने जो दरख्वास्त तैयार किया, उस पर ४०० भारतीयों ने दस्तखत किये। इस दरख्वास्त ने नेटाल की विधान सभा तथा सरकार में काफ़ी हलचल मचा दी, फिर भी भारतीयों के विरुद्ध बिल पास हुआ।

इस पर भी एक मौका और रह गया था। नेटाल की विधान सभा में जो बिल पारित हुआ, उस पर महारानी विक्टोरिया के दस्तखत हुये बिना वह क़ानून नहीं बन सकता था। इसलिए ब्रिटिश उपनिवेशों के मंत्री के नाम गांधीजी ने एक प्रार्थना पत्र भेजने का निश्चय किया। उस पर दस हज़ार भारतीयों ने यानी लगभग नेटाल के सभी भारतीयों ने दस्तखत किये। गांधीजी इस दरख्वास्त के ज़रिये जनता में राजनैतिक जागृति पैदा करना चाहते थे।

उस दरख्वास्त का मूल्य समझे बिना किसी को भी गांधीजी ने दस्तखत करने नहीं दिया। इस प्रार्थना पत्र की एक हजार प्रतियाँ छपवा कर गांधीजी ने प्रमुख राजनीतिक नेताओं, ब्रिटन और भारत की सभी पत्रिकाओं को भी भेजा। इससे ब्रिटन और भारत में भी नेटाल के भारतीयों के बारे में अच्छा प्रचार हुआ।

इस बीच में गांधीजी ने अपनी यात्रा को एक महीने तक मुल्तवी कर दी, वह समय समाप्त हुआ। नेटाल के भारतीयों ने गांधीजी से वहीं पर रह जाने की प्रार्थना की। उस समय यह कहना मुश्किल था कि ब्रिटीश सरकार इस बिल को स्वीकार करेगी। हो सकता है कि इससे भी बढ़कर अन्याय भारतीयों के साथ हो जावें। गांधीजी चले जाते तो महीने भर की मेहनत बेकार साबित होगी।

गांधीजी वहीं रह जाते तो उनका खर्च कैसे चलेगा? कम से कम एक साल के लिए उन्हें १०० पौण्ड की जरूरत थी। बीस व्यापारियों ने मिलकर उनका खर्च उठाने की स्वीकृति दी।

गांधीजी ने सुप्रीम कोर्ट में प्राक्टीस करने की अर्जी दी। परंतु नेटाल की बार सोसाइटी ने इस पर आपत्ति उठायी।

प्रधान न्यायाधीश ने कोई आपत्ति तो न की, लेकिन उन्होंने यह शर्त लगायी कि वे अदालत में पगड़ी नहीं पहनें। गांधीजी को एक दिन पगड़ी उतारना अपमानजनक मालूम हुआ। मगर गांधीजी उस समय उससे भी ज्यादा मुख्य विषयों में निमग्न थे।

गांधीजी ने अनुभव किया कि नेटाल के भारतीयों की ओर से स्थायी रूप में एक संस्था का होना जरूरी है। इसलिए उन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस नामक एक संस्था स्थापित की। गांधीजी इंडियन नेशनल कांग्रेस के नियम और उद्देश्यों से अपरिचित थे। इसलिए उन्होंने नेटाल इंडियन कांग्रेस को वहां के भारतीयों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया। इससे उनका लाभ ही हुआ। जिस समय इंडियन नेशनल कांग्रेस केवल चर्चाओं की वेदिका बनी थी, उस समय नेटाल कांग्रेस वहां के भारतीयों की राजनैतिक, सामाजिक और नैतिक उन्नति के लिए कार्य करनेवाली संस्था के रूप में बदल गयी। गांधीजी ने उस संस्था के मंत्री के पद पर कार्य करते मन से उत्साह भर दिया। नये सदस्यों को बनाना व चन्दा वसूल करना गांधीजी एक पवित्र कार्य मानते थे।

राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में गांधीजी ने पारिश्रमिक नहीं लिया। उनका विचार था कि तनख्वाह लेकर कार्य करने से उनकी स्वतंत्रता छिन जायगी। इस बात का भी गांधीजी ने विरोध किया कि राजनैतिक कार्यकर्ता को अपने दल की गलतियों का समर्थन करना चाहिये। उन्होंने सचाई को प्रधानता दी। अपने अनुचरों की त्रुटियों की निर्दयता पूर्वक आलोचना की। उनका उद्देश्य था कि उन लोगों को अपनी आर्थिक व राजनैतिक अधिकारों के लिए लड़ते हुए अपनी एकता और नैतिक स्तर को ऊंचा उठाना है।

९२. प्राचीन ग्रीक के शिल्प

ग्रीक कलाशिल्पियों ने शिल्प के क्षेत्र में जो उन्नति की, वह कोई देश नहीं कर पाया। उनके मंदिर व पूजा के स्थान ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कटोरे, सुराही, रसोई के बर्तनों पर शिल्प देखा जा सकता था। ग्रीकवासी संगमरमर के पत्थर तथा कांसे पर शिल्प गढ़ते थे। ये शिल्प ई. पूर्व तीसरी शताब्दी के थे। यहाँ घोड़े पर सवारी करनेवाला बालक चित्रित है। नीचे ग्रीक देवताओं के प्रमुख ज़िअस चित्रित है, लेकिन उनका भाई समुद्र देवता (हमारे वरुण देव) हो सकता है। ये दोनों शिल्प समुद्र के गर्भ से प्राप्त हुए हैं।